Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 20 अंक 06 30 जून, 2020 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

कोरोना काल में भी किसान पर ही आपदा की ज्यादा मार

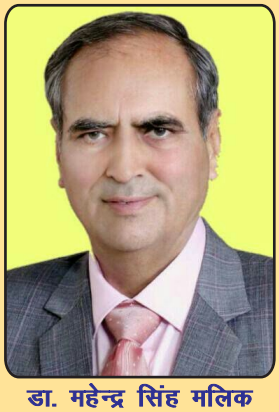

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

कोरोना महामारी के हिसाब से आज अपना देश दुनिया के सबसे अधिक प्रभावित दस देशों में शामिल हो चुका है। आज भारत में 446787 व्यक्ति कोरोना से संक्रमित हो चुके हैं और 14471 व्यक्ति अपनी जान गंवा चुके हैं जोकि इटली व स्पेन से भी ज्यादा है। राष्ट्र में 24 घंटे में औसतन लगभग 18 हजार से अधिक व्यक्ति इस महामारी से संक्रमित हो रहे हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के साथ होने के कारण हरियाणा में भी स्थिति काफी गंभीर है। प्रदेश के एनसीआर क्षेत्र गुरूग्राम, फरीदाबाद के साथ–साथ सोनीपत में कोरोना महामारी तीव्रता से बढ़ रही है। आज हरियाणा प्रांत में 11520 व्यक्ति इस बीमारी की चपेट में आ चुके हैं और 178 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई है। इस महामारी के प्रकोप की मार सबसे ज्यादा किसानों–कामगारों व काश्तकारों पर पड़ी है जिनको ना तो खुदा मिला है और ना ही विसालेसनम। फसलों व सब्जियों का उचित मूल्य न मिलने तथा भुगतान न होने के कारण किसान वर्ग की हालात खराब हो गई है और लाक डाऊन के कारण 65 लाख से अधिक किसान–काश्तकार न केवल बेघर हो गये हैं बल्कि हजारों दुर्घटनाओं का शिकार हो चुके हैं और रोजी–रोटी गवाने के कारण दर–दर की ठोकरें खा रहे हैं।

कोरोना लाकडाउन के दौरान किसान को अपनी खून–पसीने से तैयार की गई फसल को बेचने के लिए बहुत परेशानी झेलनी पड़ी क्योंकि सरकार द्वारा सोशल डिस्टैंसिंग के साथ–साथ आन–लाईन पंजीकरण प्रक्रिया आवश्यक करने तथा अस्थाई तौर पर नई बनाई गई अनाज मंडियों में उचित खरीद व्यवस्था ना होने के कारण किसानों को अपनी फसल को लेकर जगह–जगह भटकना पड़ा। इसके इलावा बेमौसमी वर्षा से किसानों की लाखों टन तैयार फसल खेतों व मंडियों में खराब हो गई जिसके लिए उसे सरकार की ओर कोई मुआवजा राशि नहीं दी गई और ना ही खराब फसलों के नुकसान की भरपाई के लिए सरकार की ओर से कोई राहत राशि की घोषणा की गई। इसी प्रकार सब्जी उत्पादन करने वाले किसानों को भी अपनी तैयार फसल को सड़कों पर फैंकना पड़ा। देश के अलग अलग हिस्सों से ऐसे समाचार मिले लेकिन कोई भी सरकार धरातल पर उतरकर किसानों का दर्द कम नहीं कर सकी। चाहे वो जम्मू कश्मीर के फूल किसान हों या हरियाणा, पंजाब के पशुपालक और सब्जी उत्पादक किसान हों, सबके दर्द पर मरहम लगाने वाला कोई नहीं था। देश के अलग अलग हिस्सों में अपने उत्पादन के नुकसान से परेशान किसानों ने आत्महत्या भी की है। दर्जनभर घटानाएं तो मीडिया में आई भी हैं लेकिन सैकडों ऐसी भी होंगी जिसकी किसी को जानकारी भी नहीं होगी। इसके बावजूद कोरोना संकट के समय देश के लाखों भूखे पेट भरने के लिए किसान ने अपने अनाज को कुर्बान किया है। यहां तक कि खेतों से सीधे ट्राली जरूरतमंदों के भोजन के लिए अनाज की किसानों ने भिजवाई

है। केंद्र सरकार ने किसानों के राहत के नाम पर जो पैकेज देने की घोषणा की है उसका तत्काल किसी को फायदा ना तो हुआ और ना ही होने वाला है।

सरकार द्वारा संशोधित (ए0पी0एम0सी0) कृषि उत्पाद मार्केट कमेटी एक्ट भी किसान कास्तकार के लिए हितकार नहीं लगता। इस अध्यादेश द्वारा सरकार भारतीय खाद्य निगम आदि खरीद एजेंसियों की बजाए किसान उत्पादन को प्राईवेट खरीद एजेंसियों के हवाले करना चाहती है और किसान के हितों की रक्षा का जिम्मा नीजि कंपनियों के हाथ में होगा। वास्तविकता यह है कि किसान की मेहनत से ही अब तक राष्ट्र खाद्यान्न में आत्म निर्भर बन पाया है और किसान हित को दर किनार करने से फिर से यु0एस0 द्वारा निर्धारित पी0एल0–480 की अवैध शर्तों के तहत मंहगा खाद्यान आयात करना पड़ेगा। कृषि सुधार के लिए निर्मित शांता कुमार कमेटी के नए कानून व अध्यादेश भी किसान के लिए घातक सिद्ध होंगें, जिसमें मुख्य खाद्य एजेंसी भारतीय खाद्य निगम, हैफेड व किसानी उपज की एम0एस0पी0 व पी0डी0एस0 को प्रभावहीन किया गया है और अब चीनी उद्योग को किसान को केंद्रीय सरकार द्वारा निर्धारित एफ0आर0पी0 व राज्य सरकार का ए0ए0पी0 देने को बाध्य नहीं किया जा सकता। आर्थिक तंगी का आधार बनाकर मिडलमैन (आढ़तियों) के एकीकरण के कारण राज्य सरकारों को अनिच्छा से कृषि मार्केटिंग कानून में बदलाव करना पड़ेगा जिसमें किसानों को फसलों का उचित मूल्य मिलने की बजाए केवल शोषण मिलेगा और इससे राज्यों में मार्केट की आर्थिक व्यवस्था खराब होने के साथ–साथ लगभग 15 करोड़ किसान व्यापारी वर्ग की मनमानी का शिकार हो जाएंगें।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

किसान व महामारी के कारण बेरोजगार हुए कृषि श्रमिकों के लिए तुरंत राहत का कोई प्रावधान नहीं है। सरकार को ग्रामीण भारत के प्रति अपनी जिम्मेवारी समझनी होगी और हालात को देखते हुए कास्तकार, श्रमिकों व कमजोर वर्गों की जमीनी हकीकत पर गंभीरता से विचार करके उनके बर्चस्व के लिए तुरंत प्रभावी कदम उठाने चाहिए। सरकार द्वारा लागू की गई अधिकतर योजनाएं किसान हित में नहीं हैं। उदाहरण के लिए प्रधानमंत्री किसान योजना ने ठेके पर खेती करने वाले किसानों के लिए कोई राहत नहीं दी गई है। सरकार द्वारा कार्पोरेशन सैक्टरों के लिए बजट में 1.45 लाख करोड़ का प्रावधान किया गया है लेकिन कृषि सुधार के लिए फंड तथा रोजगार उत्पन्न करने के लिए किसी भी ग्रामीण योजना के लिए कोई फंड निर्धारित नहीं किया गया। कृषि श्रमिकों को मनरेगा स्कीम के लिए दी जाने वाली 202 रूपये प्रति दिन की दिहाड़ी राष्ट्र की औसत दैनिक अकुशल श्रमिक के मजदूरी से 40–50 प्रतिशत कम है जिसकों विशेषज्ञ कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार 375 रूपये प्रति दिन किया जाना चाहिए। यह भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि अक्तुबर 2019 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ मनाई गई लेकिन उनके नाम से शुरू की गई रोजगार गारंटी योजना आज शून्य में अटकी हुई है। आज हरियाणा में बेरोजगारी की दर 27.5 प्रतिशत है जो राष्ट्रीय औसत से कहीं ज्यादा है।

अभी तक राष्ट्र के 6 राज्यों से लगभग 67 लाख कृषि व अन्य प्रवासी मजदूर कोरोना महामारी के दौर में बेरोजगारी व भुखमरी के कारण अपने राज्यों की ओर कूच कर गए लेकिन उनके रोजगार व पुर्नस्थापना की केंद्रीय व संबंधित राज्य सरकारों द्वारा कोई स्थाई नीति सुनिश्चित नहीं की गई है। कृषि श्रमिकों के इस पलायन का राज्य में धान की रोपाई व खरीफ की फसलों के रख–रखाव पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इन प्रवासी कृषि व औद्योगिक श्रमिकों के जीवन–यापन व पुर्नस्थापना के लिए सरकार का प्रभावी ढंग से प्रोत्साहन सुनिश्चित करने होगें जो कि कोरोना की इस अफरातफरी के माहौल में इनको भुखमरी के कारण अनैतिक व अपराधीकरण से बचाने के लिए आवश्यक भी है। कोरोना महामारी के दौर में कृषि श्रमिकों के खुले आवागमन को रोकने व सोशल डिस्टैंसिंग की पालना के लिए सरकार द्वारा उचित एवं स्थाई व्यवस्था करना बहुत जरूरी है।

आज किसान हितैषी का नारा देने वाली सरकारों की कथनी और करनी में अंतर है। हरियाणा कृषि विभाग के सौजन्य से पी0एम0 फसल योजना के तहत बीमा कंपनियों को लाभ देने हेतु फसल बीमा प्रीमियम दर गत वर्ष की तुलना में चार गुणा तक बढ़ा दी है जो कि खरीफ फसलों पर 120 रूपये से लेकर 430 रूपये प्रति हैक्टयर तथा रबी फसलों के लिए 82.50 रूपये लेकर 128 रूपये फसल के अनुसार अधिक काटे जाएगें। भारत में आज किसानों पर 12 लाख 60 हजार करोड़ का ऋण है, जिसका ब्याज तक चुका पाना कृषकों की कमर तोड़ रहा है, जिससे साल भर में करीब 1200 किसान आत्महत्या करते हैं। यह बात भारत सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में लिखित में दी है और वास्तव में यह गिनती इससे भी अधिक है। आज भी किसान आत्महत्याएं करने को मजबूर हैं, जिसमें महाराश्ट्र सबसे अग्रणीय है। वर्ष 2004 में 4147, वर्ष 2005 में 3926, वर्ष 2013 में 3146 आत्महत्याएं हुई केवल हरियाणा में अप्रैल 2015 में 4 आत्म हत्याएं हुई। एक सर्वे के अनुसार गत 20 वर्षों में 348538 आत्महत्याएं हुई अर्थात 45 आत्महत्याएं प्रतिदिन के हिसाब से हुई हैं।

आजकल सरकार धान की खेती को छुडवाकर मक्के की खेती करवाना चाहती है और इसके लिए मात्र 6–7 हजार प्रति एकड़ प्रोत्साहन राशि का भी ऐलान कर रखा है। सरकार का कहना है कि इससे भूमिगत जलस्तर बढेगा लेकिन जहां पानी ही दस फुट से ऊपर है उस किसान के पास विकल्प क्या है। दूसरा सरकारी योजनाओं की असलियत ये है सरकार की प्रोत्साहन राशि किसानों के खातों में समय पर तो कभी पहुंचती ही नहीं है। खुद सरकार ये मान रही है पांच हजार से ज्यादा आढ़ती तो ऐसे हैं जिन्होंने अभी तक किसानों को ही उनकी फसल के मूल्य नहीं चुकाए हैं।

अब एक और रिपोर्ट की तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहूंगा। प्रदेश में 25 साल पहले 1995 में आई बाढ़ का दंश किसान आज भी झेल रहे हैं। बाढ़ की वजह से साल दर साल भूजल स्तर बढ़ रहा है। वर्ष 1996 में जहां पानी का औसतन स्तर 4 से 7 मीटर था वहीं यह अक्टूबर 2019 में कम होकर 3–4 मीटर रह गया है। कई क्षेत्रों में तो पानी का स्तर 2–3 मीटर भी है। बारिश होते ही जमीन से बाहर पानी आने लगता है, फिर पानी धीरे–धीरे सूख जाता है लेकिन लवण तो जमीन पर ही जमे रह जाते हैं। इससे जमीन में लवण और सेम की समस्या बढ़ जाती है और फिर धीरे धीरे जमीन बंजर हो जाती है और खेती के लायक नहीं रहती है। प्रदेश में इस समय 35 लाख हेक्टेयर रकबे में खेती की जा रही है। इसमें साढ़े चार लाख हेक्टेयर जमीन बंजर होने की कगार पर पहुंच चुकी हैं या हो चुकी है। इसका सीधा सीधा असर किसानों पर पड़ेगा क्योंकि घटती जोत से किसान वैसे ही कर्ज में डूबते जा रहे हैं। इसे सुधारने में सरकार के न तो कोई रूचि है और ना ही कोई कारगर नीति जबकि हर सरकार ये दावा करती है कि वो किसानों के हित में बहुत कुछ कर रही है। साढे चार लाख हेक्टयेर भूमि के लवणीय होने से प्रदेश के हजारों किसान परिवार गरीब हो चुके हैं और इसकी जिम्मेदारी भला अब किस पर डाली जाएगी।

ऐसे ही सरकार का एक और फैसला था जिस पर किसानों को हाईकोर्ट में जाना पड़ा। कुरूक्षेत्र के पेहवा ब्लाक के गांव गढ़ी लांगरी के तीन दर्जन से अधिक किसानों ने हरियाणा सरकार की उस अधिसूचना को चुनौती दी है जिसके तहत सरकार ने पंचायतों से जमीन पट्टे पर लेकर उसमें धान की फसल लगाने पर रोक लगा दी है। किसानों ने याचिका

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। –रवीन्द्रनाथ टैगोर

दायर हरियाणा सरकार की 23 अप्रैल 2020 को जारी अधिसूचना पर तुरंत रोक की मांग की है। किसानों ने कोर्ट को बताया कि पीने के पानी के लिए या कृषि प्रयोजन के लिए ट्यूबवेल स्थापित करने पर उनके यहां कोई प्रतिबंध नहीं है और इस प्रकार पूरे ब्लॉक को उपरोक्त अधिसूचना के तहत रखा जाना कानून की नजर में उचित नहीं है। उनके यहां पानी की कोई कमी नहीं है। विपरीत इसके कि अगर यहां धान की खेती नहीं की गई तो पानी के कारण उनकी जमीन खराब हो सकती है। सरकार ने सभी को एक आंख से देखकर उनके गांव को भी उस ब्लॉक में शामिल कर दिया जिसमें पानी का लेवल खतरनाक स्तर पर है, जबकि ऐसा नहीं है। इस संबंध में दायर एक याचिका में बताया गया कि मेरा पानी मेरी विरासत नीति के तहत सरकार ने बगैर किसी वैज्ञानिक जांच के उनके गांवों में पंचायती जमीन पट्टे पर लेकर उसमें धान की फसल लगाने पर रोक लगा दी परंतु माननीय उच्च न्यायालय ने इस सरकारी आदेश पर रोक लगा दी है।

अब सरकार की भावांतर भरपाई योजना को देख लें। सरकार का कहना है कि अगर आपका इस योजना में शामिल उत्पाद मंदे पर बिका तो सरकार उसकी भरपाई करके देगी लेकिन पिछले कई दिन से तोशाम के किसान इस महामारी में धरने पर बैठकर सरकार को कोस रहे हैं। इन किसानों के बीच इनेलो के नेता अभय चौटाला पहुंचे तो सरकार हरकत में आई लेकिन अभी तक कुछ हुआ नहीं है। भावांतर भरपाई का पैसा तो मिल ही नहीं सकता है क्योंकि लोकडाउन में फसल तो मंडी जा ही नहीं पाई। भिवानी के तोशाम क्षेत्र में टमाटर की बंपर पैदावार से खुश होने की बजाए इसे बेचने के लिए किसान के पसीने छूट गए और हालत ये हो गई कि किसान कर्ज के तले डूब गए हैं। किसान कुल उत्पादन में से करीबन 15 प्रतिशत टमाटर ही मंडी में बेच पाया और बाकी सड़कों पर फेंकना पड़ा। तोशाम क्षेत्र में करीबन 600 एकड़ में टमाटर की खेती है। काफी आमदनी की उम्मीद पर बैठे टमाटर की खेती करने वाले किसानों को मजबूरन खेत में ही अनिश्चितकालीन धरने पर बैठना पड़ा।

कॉटन बेल्ट फतेहाबाद, सिरसा और हिसार के किसान सरकार की अपील पर धान की जगह कपास को अपनाने भी लगे हैं, लेकिन हरियाणा में कपास का फुल परूफ मार्केटिंग सिस्टम नहीं होने से झिझक भी रहे हैं। अभी तक हरियाणा में करीब सवा सात लाख हेक्टेयर में कपास बोई जाती है, लेकिन इस बार रकबा बढ़ा है। फतेहाबाद में इस बार 6711 हेक्टेयर से अधिक में कपास की खेती की जा रही है। सिरसा में यह क्षेत्र 19 हजार हेक्टेयर से अधिक है। यानि सरकार की मेरा पानी–मेरी विरासत कामयाबी की ओर बढ़ रही है। प्रदेश में इस बार एक लाख दस हजार हेक्टेयर में धान की खेती कम होगी। हिसार स्थित चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कपास अनुभाग से सहायक विज्ञानी डा. करमल मलिक बताते हैं कि अगर धान के स्थान पर कपास की खेती की जाती है तो वह बराबर का फायदा तो दे सकती है, मगर इसके लिए मजबूत मार्केटिंग सिस्टम चाहिए। जो अभी तक प्रदेश में नहीं है। अधिकतर कपास भारतीय कपास निगम (सीसीआई) के माध्यम से खरीदी जाती है। एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) तय होने के बावजूद किसानों को कम मूल्य पर कपास बेचने को मजबूर होना पड़ता है, क्योंकि कपास खरीदने में प्रदेश सरकार की सीधी भूमिका नहीं है। कपास की खरीद सीसीआई के जरिए केंद्र सरकार करती है। इसके अलावा किसान व्यापारियों को भी कपास बेचते हैं। होना ये चाहिए कि सरकार गेहूं, धान, सूरजमुखी और सरसों की तर्ज पर किसानों से सीधी खरीद करे। मंडियों में आधारभूत ढांचा स्थापित करे। बिचौलिये और अन्य कमीशन ऐजेंटों की भूमिका खत्म हो। किसानों को प्रोत्साहन राशि 7000 रुपये समय से मिले। कीटनाशक और खरपतवार नाशक सस्ते मिलें।

हकीकत में हरियाणा के 5 लाख 97 हजार 464 किसान आज भी 371.258 करोड़ के कर्जदार हैं। किसानों ने ये कर्ज प्रदेश के विभिन्न प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों, जिला केंद्रीय सहकारी बैंकों और हरियाणा राज्य सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंकों का चुकाना है। चूंकि ये कर्ज लंबे समय से लम्बित है, लिहाजा बैंकों ने अधिकतर किसानों को डिफाल्टर भी घोषित किया हुआ है। मगर, दूसरी ओर सरकार ने अपनी एक खास एकमुस्त निपटान योजना के जरिए किसानों के पास कर्ज के रूप में दबा अपना करोड़ों रुपये निकलवा भी लिया है। भले ही इसमें सरकार को ब्याज राशि का खासा नुकसान हुआ है। मगर इस योजना के अंतर्गत सरकार ने ब्याज माफी का ये लाभ किसानों को देते हुए तीनों सहकारी बैंकों की कुल 149.856 करोड़ की मूल राशि जरूर रिकवर कर ली है। इन पांच महीनों में प्रदेश के 418212 किसानों 1439.97 करोड़ का ब्याज माफी सरकारी आंकड़ों में है लेकिन इसके अलावा हकीकत ये भी है कि प्रदेश का करीबन हर किसान आज किसी न किसी का कर्जवान जरूर है।

सरकार को इस दिशा में भी सोचने की जरूरत है। किसान–काश्तकार को उसकी फसल के न्यूनतम समर्थन मूल्य के भुगतान का कानूनी तौर से अधिकार दिया जाना चाहिए। इस संदर्भ में सुप्रसिद्ध कृषि विशेषज्ञ श्री देवेन्द्र शर्मा ने भी कहा है कि फसलों के न्यूनतम मूल्य निर्धारित करने के लिये अंर्तराष्ट्रीय कीमतों के साथ इसकी तुलना नहीं की जानी चाहिये क्योंकि बहुत से राष्ट्र विशेषकर यूरोपीयन संघ, कैनेडा आदि तो अनेकों कृषि उत्पादनों पर किसान को 71 प्रतिशत तक की सबसिडी देते हैं।

डॉ0 महेंद्र सिंह मलिक
आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति एवं
जाट सभा, चंडीगढ व पंचकुला

धैर्य रखना मुश्किल होता है, लेकिन उसका फल मीठा होता है। – ससो

Humanitarian Crisis of The Century

RN Malik & R. S. Rathee

The sight of migrant workers trudging along the roads on foot with their hungry children and baggages on their heads covering a marathon journey of 500 to 1000 miles is both heart rending and tear jerking. The determination of these workers to reach there far flung sweet homes on foot is no less than, the determination of mountaineers trying to scale up the Mount Everest. T V channels deserve kudos for displaying the sad plight of these hapless workers on daily basis. Newspapers also give graphic account of their odyssey. An exodus of greater ferocity occurred only during the partition of the country in 1947.

This humanitarian crisis has occurred because of the insensitive attitude of both the State and Central governments. The Prime Minister clamped the lockdown on 24th March without consulting the Chief Ministers and conjuring the likely side effects on the livelihoods of cores of migrant workers. The sudden clampdown order was like a Tugliqi Firman.

The Prime Minister has addressed (rather sermonised) the nation four times and has not spoken a word on the painful journeys of these unfortunate workers so far. This serious issues was not discussed even once in three video conferences of the Prime Minister with the State Chief Ministers. 80 workers have lost their lives in different vehicular collisions. 16 workers were mowed by a goods train on the railway track in Maharastra.29 workers died of exhaustion Netheir the State nor the Central government announced any ex- gratia grant to the bereived families. One does not know how their bodies were disposed. . The worst accident took place yesterday at Aurraya in U. P. where 24 workers lost their lives and 15 workers received very serious injuries. The U. P. government announced only a miserly grant of Rs. 2 lac for each of the bereived family and Rs. 50000 for the injured. The treatment cost of a seriously injured person will run into lacs of rupees. Why the money was not released from the recently created Prime Minister relief fund? These workers came from Rajasthan and were packed in a truck like sardines.But the Chief Minister of Rajasthan has not come forward to provide financial assistance to the families of the deceaseds.

The Rs. 20 lac crore package of the Prime Minister offers nothing to the starving families of these workers except ten kg. of free foodgrains per family to cover a period of two months. Had the government restricted the arrival of Indians from corona infested countries to 2000 per day subjected to 14 days quarantine protocol at quarantine centres, India would have remained a Covid free country and saved from the drudgery of four lockdown spells.

The most despicable part of this scenario is that the pitiable condition of these workers has not hurt the conscience of our leaders so far. During the TV debates they only indulge in a ferocious blame game and their tone shows no compassion. They still brazenly claim that all is well in their respective states. The Prime Minister is working on the Mantra "Jan hai jahan hai" and not " Save the lives and livelihoods both. "

By now, the Prime Minister should have directed all the concerned Chief Ministers to requisition all buses ,trucks, Shramic trains and other possible modes of transport in their respective territories to evacuate all the stranded workers and send them to their respective destinations like the great evacuation plan of 3 lakh British soldiers from Dunkirk in one night during the second World War. But our Prime Minister is no Winston Churchill. Our society is equally to be blamed for not coming forward to help these destitute families. The governments and many organisations take lot of pains to set temporary food camps for Shiv Bhakts who bring kavads from Haridwar. Why governments did not make similar efforts now? Only Sikh sangats and some NGOs did a yeomans service in feeding the migrant workers. Yesterday a TV channel showed that a truck owner charged Rs. one lac to carry forty workers to their destinations under the very nose of policemen standing there. The State governments also have made no arrangements to carry the workers brought by Shramic trains from the stations to their respective villages in the interiors .The PMO has set up a separate cell to monitor the progress of Indians coming from abroad by Air India flights but has no time for providing transport fasciitis for these helpless workers.

We should not forget that we are leading comfortable and cosy lives only through the hard labour of these people. They build our houses or malls or pent houses, clean our roads, load the material in trucks,

sow and harvest the crops, clean the cars in the morning , water the plants in our plots, run the factories, excavate the trenches of sewer and water supply lines and what not.We work from our homes but they always work far away from their homes. But we have miserably failed to develop a symbiotic relationship with them so far. We owe a great debt to them and that must be paid now in the worst phase of their lives. If they decide to stay at their homes for one month of October, there is no body to harvest the paddy crop of farmers of northern India.

One does not know for how long we shall have to see the heart rending scenes on TV channels. We righty call our doctors and supporting medical staff as corona warriors. But these workers are greater warriors because they serve our needs round the year by the sweat of their brow. Will the Prime Minister request the people to do the thali bajao activity for these round the year un-named warriors also .Seeing their plight and determination to walk along roads in the summer heat of May, it reminds me of the thought provoking song penned by Kavi Niraj in the film Nayi Umar Ki Nayi Faisal-" Karwan Gujar Gaya,Gubar Dekhte Rahe."

Now it is becoming very costly to bring back these warriors back for sowing of paddy crop.. A farmer of my village hired a mini bus to bring twenty workers from Darbhanga district in Bihar. The owner of the bus charged Rs. 62000 for to and fro journey. He told that farmers of Panjab had carried AC coaches to bring them back to Punjab for the same purpose. Trains are not running between Bihar and Punjab these days. You can now imagine the extra cost the farmers to pay for their transportation.

स्वन्त्रता-सेनानी अमर बलिदानी राजा नाहर सिंह

– स्वन्त्रता–सेनानी अमर बलिदानी राजा नाहर सिंह

वीरता जहां पर नहीं, पुण्य का क्षय है।
वीरता जहां पर नहीं, स्वार्थ की जय है।।

यथेष्ट बलवान और साहसी होने का धर्म या भाव वीरता है। विकट परिस्थितियों में भी आगे बढ़कर धैर्य और साहसपूर्वक अपने कर्त्तव्य का पालन करना वीरता है। आत्मबल और मानसिक प्रेरणा से अनुप्राणित शक्ति का नाम वीरता है। वीरता का मुख्य आधार उत्साह, आत्मविश्वास, साहस, धैर्य एवं ध्येय के प्रति निष्ठा पर टिका है। वीरता यश की प्रेयसी है। जीवन में महान कार्य करने की प्रेरक शक्ति है। इसी वीरता की श्रृंखला में जुड़े अमर बलिदानी वीर राजा नाहर सिंह का नाम जग जाहिर है। जिन्होंने अपने प्राणों का मोह त्याग कर राष्ट्रहित में सच्ची वीरता का अनुपम–अनुपमेय अदाहरण हमारे समक्ष रखा।

लगा दे आग न दिल तो आरजू क्या है?
न जोश खाए जो गैरत से वह लहू क्या है?

वीरता के पर्याय नाहर सिंह की पृष्ठभूमि को समझना अत्यावश्यक है। चौ. गोपाल सिंह सन् 1705 में सिही गांव में आकर बसे। वे उच्च व्यक्तित्व के धनी थे। 1710 में चौ. गोपाल सिंह परगनेदार बने। उनके स्वर्ग सिधार जाने पर उनके पुत्र चौ. चरण सिंह परगनेदार बने। चौ. चरण सिंह के बाद उनके बेटे बलराम (बल्लू राजा) के नाम से प्रसिद्ध हुए। 25 दिसम्बर 1763 को दिल्ली के निकट शाहदरा में महाराज सूरजमल भ्रमण करते समय देशद्रोही पूर्वी ब्राह्मण की जासूसी सूचना से घेर लिए गए और बलिदान हो गए। उनके बेटे जवाहर सिंह ने बल्लू राजा की सहायता से दिल्ली पर आक्रमण किया। तत्कालीन बादशाह अहमदशाह की सेना को गाजर मूली की तरह काटा गया, मारा गया और हरा दिया गया। इसी युद्ध में राजा बलराम शहीद हो गया। दिल्ली के किले में भरतपुर व बल्लभगढ़ के जाटों का कब्जा हो गया। लेकिन यह क्षणिक रहा। अहमदशाह ने अपनी पुत्री का डोला जवाहर सिंह को देना चाहा। महारानी किशोरी को पोंगा पन्थी ब्राह्मणों ने राजगद्दी के शुभ–अशुभ का सवाल खड़ा करके अहमदशाह की पुत्री का विवाह राजा जवाहर सिंह से नहीं होने दिया। किशोरी रानी की इच्छानुसार सेना में वीर सैनिक कमरूछदीन पठान के साथ अहमदशाह की पुत्री का निकाह कर दिया गया। जाट वीरों ने इस प्रकार बादशाह अहमदशाह को बख्श कर दिल्ली का सिंहासन गवां दिया।

राजा बलराम के शहीद होने के बाद उनके बेटे किशन सिंह ने बल्लभगढ़ में किले के निर्माण पर धयान दिया। राजा किशन सिंह की मृत्यु के बाद राजा अजीत सिंह ने बल्लभगढ़ में किले के निर्माण पर ध्यान दिया। राजा किशन सिंह की मृत्यु के बाद राजा अजीत सिंह ने बल्लभगढ़ रियासत का विस्तार किया। लेकिन परम्परा घरेल कलह के कारण 1793 में अजीत सिंह का कत्ल हो गया। उसके बाद उनके भाई का लड़का बहादुर सिंह 1803 में राजा बना जिसकी 1806 में मृत्यु हो गई। उसके बाद बहादुर सिंह का पुत्र नारायण सिंह राजा बना लेकिन दिसम्बर 1806 में उसकी भी मृत्यु हो गई। उनके बाद उनका बेटा राम सिंह राजा बना जिसके शासन काल में ही रामगंज का निर्माण एक अच्छे व्यापारिक केन्द्र अर्थात् मण्डी के रूप में किया गया। स्थापत्य कला की दृष्टि से इनका युग अत्यन्त महत्वपूर्ण था। महाराज राम सिंह बड़े ही कला–प्रेमी,

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

धार्मिक और मर्यादा पालक शासक थे। उनके दो पुत्र हुए नर सिंह और रंजीत सिंह।

राजकुमार रंजीत सिंह अपनी ननिहाल कुचेसर रियासत में चले गए क्योंकि उनके नाना के कोई सन्तान (लड़का) उत्तराधिकारी के लिए नहीं था। नर सिंह (नाहर सिंह) का जन्म 6 अप्रैल 1821 को हुआ था। नर सिंह का जन्म महाराज राम सिंह के भाग्योदय का कारण बना। कुलगुरू पं. कुलकर्णी ने नर सिंह की जन्म कुण्डली के आधार पर कहा कि यह बालक तो राजवंश की यशोवृद्धि का कारण बनेगा। सपूत के पांव पालने में दिखाई दे जाते हैं। बालक नर सिंह वीरता और पराक्रम में अद्वितीय था। सुसंस्कृत विचारों में पला बढ़ा नर सिंह अपनी मंजिल की ओर अग्रसर होने लगा। दस वर्ष की अवस्था तक उसने पंचतन्त्र और हितोप्रदेश की अनेक प्ररेणादायक कथाओं का अध्ययन कर लिया था। उसे रामायण और महाभारत ग्रन्थ भी पढ़ने का सुअवसर मिला। रामायण के पात्र लक्ष्मण और महाभारत के पात्र अर्जुन उसके प्रेरणा स्रोत बने। एक बार उनके पिता महाराज राम सिंह ने अपने दोनों पुत्रों (रंजीत सिंह व नर सिंह) की परीक्षा लेनी चाही। दोनों को बुलाकर उसने पूछा गया कि बेटा एक श्रेष्ठ राजा में क्या गुण होने चाहिए? तब रंजीत सिंह ने कहा कि उसे शस्त्र विद्या का ज्ञान होना चाहिए लेकिन नर सिंह ने बीच में ही टोकते हुए कहा–नहीं पिता जी, 'शास्त्र के बिना शस्त्र का कोई मूल्य नहीं। जहां एक वीर सैनिक की विशेषता सिर्फ शस्त्र विद्या है, वहां एक श्रेष्ठ राजा के लिए शस्त्र और शास्त्र दोनों का ज्ञान आवश्यक है।'

महाराजा राम सिंह अपने पुत्र नर सिंह की ज्ञानभरी बातों से बड़े प्रभावित हुए। उन्हें मालूम हो चला था कि यह बालक कुल का नाम रोशन ही नहीं करेगा अपितु नौनिहालों का आदर्श भी बनेगा। ईश्वर को भी इस बालक की कठिन परीक्षा लेनी थी। 13 मई 1829 को पिता राजा राम सिंह का स्वर्गवास हो गया। उस समय पर सिंह मात्र 9 वर्ष की अवस्था में प्रवेश कर रहा था। अल्पायु होने के कारण उनके चाचा अभय सिंह ने सम्पूर्ण राज–काज की व्यवस्था संभाली। नर सिंह की शिक्षा राजपाठशाला में पण्डित कुलकर्णी द्वारा पूर्ण कराई गई। मौलवी रहमान खान ने उन्हें उर्दू, फारसी का भी ज्ञान कराया। सेनापति जोधा सिंह ने घुड़सवारी, तैराकी, तीरन्दाजी, भाला और तलवार चलाने की कला सिखाई। पन्द्रह वर्ष की आयु तक नर सिंह शस्त्र विद्या में निपुण हो गए। राजसी अनुवृत्ति को दोहराते हुए एक बार युवराज नर सिंह अपने अंगरक्षकों के साथ शिखार खेलने गये। वहां किसी हिरण का पीछा करते हुए उनकी एक बब्बर शेर से भिड़न्त हो गई। साहस और वीरता के धनी युवराज नर सिंह ने काफी दांव–पेंच खेलने के बाद शेर को मार डाला किन्तुइस खतरनाक प्रयास में उनके अंगरक्षक वीर हरचन्द सिंह को शेर ने मार डाला। उनकी वीरता से प्रभावित होकर माता वसन्तकौर ने उनका नाम नर सिंह से बदलकर नाहर सिंह कर दिया। जिस स्थान पर शेर से भिड़न्त हुई थी, उस स्थान पर नाहर सिंह ने वीर हरचन्द सिंह की स्मृति में गांव हरचन्दपुर बसा दिया जो आज भी बल्लभगढ़ से जाने वाले सोहना मार्ग पर पड़ता है।

16 बर्ष की आयु में युवराज नाहर सिंह का कपूरथला राजघराने की राजकुमारी बिशनकौर से विवाह हो गया। 18 वर्ष की आयु में 20 जनवरी 1839 को पंचमी के दिन युवराज नाहर सिंह का राज्याभिषेक किया गया। राजा नाहर सिंह ने 1839 से 1857 तक के अपने राज्यकाल में अत्यधिक प्रगति के आयमों को छुआ।

दिल्ली में मुगल शासन अंतिम सांसे ले रहा था। उसकी जड़ें हिल रही थीं। उनमें दम–खम नहीं रह गया था। ऐसे समय में वीरता के बल पर बल्लभगढ़ के राजा नाहर सिंह की मुगल बादशाह से दोस्ती थी। दिल्ली दरबार में राजा नाहर सिंह को सम्राट के समीप सोने की कुर्सी पर बैठाया जाता था। इस प्रकार युवा नरेश नाहर सिंह का दिल्ली दरबार में बहुत बड़ा सम्मान मिलता था। 1857 की जनक्रान्ति के दौरान मुगल बादशाह ज्र द्वारा दिल्ली युद्ध की कमाज राजा नाहर सिंह को सौंपी गई थी अब इस जिम्मेदारी को राजा नाहर सिंह ने बखूबी निभाया। एक तरु राजा नाहर सिंह दिल्ली के आन्तरिक अमनो–आमान को संभाल रहे थे और दूसरी ओर दक्षिण –पूर्वी दिल्ली के परकोटों की भी हिफाजत कर रहे थे। साथ ही बल्लभगढ़ की सुरक्षा भी तो उन्हीं का विषय था। उस समय राजा नाहर सिंह ने दिल्ली के पूर्व में अच्छी मोर्चाबन्दी की ली थी। उन्होंने जगह–जगह चौकियां बनवाकर रक्षक और गुप्तचर नियुक्त कर दिये थे।

संकट की घड़ी में दिल्ली का एकमात्र सहायक राजा नाहर सिंह ही था। यदि नाहर सिंह मित्रता न निभाता तो मुगल सम्राट और उनका परिवार लालकिले में भूखा–प्यासा ही मर जाता। राजा नाहर सिंह के प्रयास के बावजूद दिल्ली में मुगलों का शासन कमजोर पड़ता गया और अंग्रजों की पकड़ मजबूत होती गई। राजा नाहर सिंह ने स्थिति को भांप लिया और अपनी रणनीति बदली। अब केवल सुरक्षा और प्रशासन का प्रश्न नहीं था। अब अंग्रेजों पर आक्रमण करने और सैनिक संगठन को मजबूत बनाने की जिम्मेदारी भी उन पर आ गई थी। उन्होंने बल्लभगढ़ की सेना को आधुनिक हथियारों से लैस किया और प्रशिक्षण की अच्छी व्यवस्था की गई।

युवा नरेश नाहर सिंह के नेतृत्व में उसकी सुनियोजित रणनीति सफल हुई और मई 1857 को दिल्ली पूर्णतः अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त हो गई। राजा नाहर सिंह की सेना दिल्ली की पूर्वी सीमा पर तैनात हुई। मूगल सम्राट की सहायता के लिनए 15,000 रूहेलों की सुसज्जित सेना लेकर मुहम्मद बख्त खां भी दिल्ली आ गया और उसने भी राजा नाहर सिंह की रणनीति को स्वीकार किया और उन्हें पूर्वी सेना पर ही तैनात रहने की रजामंदी दी। सम्राट बहादुरशाह ज्फर बहादुर राजा नाहर सिंह को अपनी दाहिनी भुजा मानते थे।

अंग्रेजों के आधिपत्य से आजाद दिल्ली के 134 दिनों का इतिहास युवा नरेश नाहर सिंह के परिज्ञम, प्रशासन और कौशल का

इतिहास है। इस दौरान वे ही दिल्ली के बेताज बादशाह रहे। युवा नरेश नाहर सिंह की मुस्तैदी और मजबूत मोर्चाबन्दी से अंग्रेज त्रस्त हो गए थे। सर जोन्स लारेंस ने पूर्व दिशा पर हमला करने की योजना को त्याग दिया। लार्ड केनिंग को लिखे अपने एक पत्र में उन्होंने लिखा–"पूर्व और दक्षिण दिशा में बल्लभगढ़ के नाहर सिंह की मजबूत मोर्चाबन्दी है। उस सुदृढ़ सैनिक दीवार को तोड़ना तब तक असम्भव प्रतीत होता है जब तक चीन और इंग्लैण्ड से हमारी कुमुक नहीं आ जाती।"

सर जान्स लारेंस की बात सहीं निकली। आखिरकार पटियाला व जींद के राजाओं की सैनिक सहायता से अंग्रजों ने दिल्ली पर कश्मीरी गेट से ही आक्रमण किया जिसमें उन्हें सफलता मिल गई। अंग्रजों ने जब दिल्ली नगर में अचानक प्रवेश किया तो सब तरह भगदड़ मच गई। बहादुशाह ज्फर को भी भागकर हुमायूं के मकबरे में शरण लेनी पड़ी। राजा नाहर सिंह ने सम्राट बहादुरशाह को बल्लभगढ़ चलने के लिए कहा परन्तु सम्राट के सलाहकार व अंग्रेज भक्त इलाही बख्श ने उनकी एक न चलने दी। उसी के आग्रह पर बहादुशाह हुमायूं के मकबरे में रूका रहा। इलाही बख्श के मन में बेईमानी थी। परिणाम वही हुआ जो होना था। बहादुशाह ज्फर को इस रिश्तेदार ने धोखे से मेजर हड़सन द्वारा हुमायूं के मकबरे में गितार करवा दिया।

राजा नाहर सिंह ने बल्लभगढ़ पहुंचकर अंग्रेजी फौज से मोर्चा लेने का निश्चय किया। नये सिरे से मोर्चा बन्दी की और आगरे की ओर से दिल्ली की तरफ बढ़ने वाली गोरी पलटनों की धज्जियां उड़ा दी। बल्लभगढ़ के मोर्चे पर बहुत बड़ी संख्या में अंग्रेजों का कत्ल हुआ और हजारों गौरों को बन्दी बना लिया गया। इतने अधिक अंग्रेज सैनिक मारे गए कि नालियों में खून बहकर नगर के तालाब में पहुंच गया और तालाब का पानी भी लाल हो गया। जब अंग्रेजों ने देखा कि युद्ध करके राजा नाहर सिंह से पार पाना मुश्किल है तो उन्होंने धर्तता से काम लिया।

दिल्ली तो फिरंगियों ने हथिया ली थी परन्तु उन्हें भयय था राजा नाहर सिंह की युद्ध वीरता से प्रभावित होकर तत्कालीन कर्नल लारेंस ने कहा था 'जब तक राजा नाहर सिंह के हाथ में कमान है, तब तक हमारा दिल्ली पर पूर्ण अधिकार अनिश्चित है।' क्योंकि सीधी टक्कर में बल्लभगढ़ को विजित करना मुश्किल था अतः अंग्रेजों ने कूटनीति से भी काम लिया। हिन्द और मुसलमान, राष्ट्र और राज्य, जाट और राजपूत, मरहठे और जाट तथा राजपूत, रूहेले और बंदेले, और पठान इत्यादि परस्पर खूब लड़ाये गये। सन्धियां की जाती और बिना किसी कारण के तोड़ दी जाती। पक्ष ग्रहण किये जाते और छोड़ ही बदल दिये जाते थे। राज सिंहासन खरीदे जाते और सबसे बड़ी बोली बोलने के हाथ बेच दिये जाते। सैनिक सहायता खरीदी जाती और वाणिज्य वस्तु की भान्ति बेच दी जाती। अधिक लालचवश सेवक धोखा देकर अपने स्वामियों को और सैनिक अपने झण्डे को बिना विचारे परित्याग करने के लिए उत्तेजित किये जाने लगे।

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग से।
इस घर को आग लग गई घर के चिराग से।।

पारस्परिक फूट से बादशाह लाल किले में कैद थे। फिरंगियों ने चाल चली और राजा नाहर सिंह के पास एक सन्देशवाहक भेजकर कहलवाया गया कि बादशाह से समझौता होना है और इस अवसर पर बादशाह ने राजा साहब को बुलाया है। राजा नाहर सिंह ने मुसीबत की इस घड़ी में भी बादशाह के हाथ बने रहने की ठानी। हालांकि उनके विश्वस्त मन्त्रियों ने कहा भी कि उन्हें जाना नहीं चाहिए लेकिन राजा नाहर सिंह का कहना था कि सन्धि के समय उन्हें बादशाह के समीप होना चाहिए।

राजा नाहर सिंह अपने विश्वस्त सरदार भूरे सिंह, गुलाब सिंह व घुड़ सवारों की एक छोटी टुकड़ी के साथ दिल्ली की ओर चल दिए। वे जैसे ही बदरपुर से आग बढ़े कि छिपे हुए गोरे सैनिक ने अचानक कायरतापूर्ण उन पर पीछे से हमला कर दिया। वे बड़ी वीरता से लड़े, उनके सभी अंगरक्षक अपने वीर राजा के लिए बलि हो गए। राजा नाहर सिंह लड़ते–लड़ते घायल हो गए। उन्हें बेहोशी की हालत में बन्दी बना लिया गया। इस प्रकार धोखे से वह शेर अंग्रेजों के पिंजरे में बन्द हो गया। दिल्ली में फिरंगी ने कहा कि वे क्षमा–याचना करें। परन्तु उस नर नाहर का तो एक ही उत्तर था– "मैं माफी की जगह मौत पसन्द करूंगा।" माफी मंगवाने के लिए अंग्रेजों ने राजा नाहर सिंह की ससुराल कपूरथला राजघराने से उन पर प्रभाव डलवाया लेकिन राजा नाहर सिंह ने माफीनामा देने से स्पष्ट इनकार कर दिया।

आखिरकार राजा नाहरसिंह को 9 जनवरी 1858 को चादनी चौंक में सरेआम फांसी पर लटका दिया गया और उनकी रियासत जब्त कर ली गई। जिस दिन राजा नाहर सिंह को फांसी दी गई, उस दिन बूढे बादशाह बहादुशाह जफर बहुत रोये और खाना भी नहीं खाया। कहानी रियासत की जब्ती पर ही खत्म नहीं होती। बताते हैं। कि फिरंगी ने बल्लभगढ़ की ईंट से ईंट बजा दी। महलों, समाधियों, मन्दिरों, किले के परकोटों, सबको तहस–नहस कर दिया। रामसरोवर के घाटों तक को तुड़वा डाला गया। पूरे इलाके में बल्लभगढ़ राजवंश का कोई चिह्न तक नहीं छोडा।

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले, वतन पर मरने वालों का यही नामोंनिशां होगा।

अंग्रेजों द्वारा 9 जनवरी 1858 को चादनी चौंक दिल्ली में राजा नाहर सिंह को सरेआम फांसी दी गई। उस पवित्र स्थान पर जाट समाज के प्रमुख लोग हर वर्ष 9 जनवरी को एकत्र हो कर सवेरे हवन–यज्ञ करते हैं और वतन व कौम की आन–बान पर मर मिटने वाले स्वाभिमानी सूरवीर राजा नाहर सिंह को अपनी श्रद्धांजली भेंट करते है। जाट कौम को चाहिए कि वे सरकार से मांग करें कि चादनी चौंक पर राजा नाहर सिंह की प्रतिमा लगाई जाए जिस से वहां पर उनकी चिरस्थाई यादगार बन सके।

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। – स्वामी विवेकानंद

संविधान को कितना जानती हैं सरकारें और हम

– अनामिका

राजनेताओं को यह अहसास कराना जरूरी है कि संविधान महज शपथ लेने के लिये नहीं है, उसके गहरे निहितार्थों का क्रियान्यवन और जनता के अधिकारों के प्रति जवाबदेही भी जरूरी है। साथ ही जनता को भी अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। अधिक जानकारी के लिये पढ़े यह ज्ञानवर्धक लेख।

पिछले महीने पूरे देश में राजनीतिक उथल–पुथल रही। महाराष्ट्र के चुनावों में चुनाव पूर्व गठबंधन, चुनाव के पश्चात की सौदेबाजी और मेल–बेमेल गठबंधन पर आक्षेप, आरोप–प्रत्यारोप के रंग नजर आए। राजनीतिक विद्रूपताएं नजर आई। यह सूत्र कोई एक दल नहीं बोलता।। वर्ष 2005 में जब बिहार में राष्ट्रपति शासन रात के तीन बजे लागू कर दिया गया, उस समय भाजपा ने इसे लोकतंत्र ही हत्या कहा था। जब महाराष्ट्रमें रात के अंधेरे में सरकार गठन की कोशिश हुई और सूर्य की पहली किरण से भी पहले नई सरकार की घोषणा हो गई तब विरोध दलों भी यही बेसुरा राग गाया। इसी बीच 26 नवंबर को भारत में संविधान दिवस मनाया गया। प्रधानमंत्री ने यह संदेश दिया कि 26 नवंबर को संविधान दिवस के साथ भारत का संविधान लागू हाने के 70 साल पूरे हो गए। अब एक साल तक महत्वपूर्ण घटना के कार्यक्रम चलेंगे।

फिर भी प्रधानमंत्री ने यह कहा कि सरकार लोगों को संविधान में वर्णित कर्तव्यों के प्रति जागरूक करेगी और कर्तव्य पालन की शपथ दिलाएगी। इसके साथ ही न्यायमंत्री रविशंकर प्रसाद ने तो जनता के कर्तव्यों की व्याख्या करते हुए देश को गिना दिए, जिसमें संविधान का पालन, राष्ट्रगान का आदर, सभी देशवासियों में समरसता की भावना का विकास, पर्यावरण शुद्ध रखना जैसे कई कर्तव्य जनता को याद करवाए। अब ये कर्तव्य देश को सिखाने की चर्चा हो रही है तो देर से ही सही, लेकिन यह सही कदम होगा।

प्रश्न यह है कि जो संविधान की शपथ लेकर लोकतंत्र के मंदिरों में पहुंचते हैं, सांसद, विधायक और मंत्री बनते हैं तथा अन्य संवैधानिक पदों की शोभा बनते हैं, वे सब संविधान को कितना जानते है। जैसे अदालत में किसी भी साक्षीदाता को हाथ में कोई भी धार्मिक पुस्तक देकर उसकी शपथ खाने को कहा जाता है। वह फंसा–फंसाया व्यक्ति शपथ तो ले लेता है, लेकिन ग्रंथ में क्या लिखा, क्या वह जानता है या जानबूझकर उसके उपदेशों का निरादर करता है। संविधान की शपथ लेकर कोई भी पद ग्रहण करने वालों में से शायद ही दो–चार प्रतिशत लोग ऐसे होंगे जो जानते हैं कि संविधान में क्या निर्देश दिए गये हैं। बहुत ज्यादा चर्चा करेंगे तो कुछ जातिवादी नेता संविधान के आधार पर अपनी जाति के लिए अधिकार, आरक्षण, नौकरियां मांग लेंगे, लेकिन संविधान निर्माताओं ने किस भाव से लिखा, संविधान की आत्मा क्या है? इसका उन्हें उतना ही ज्ञान है, जितना राजनितिक हित साधने के लिए चाहिए।

विद्वतजनों ने लोकतंत्रीय शासन प्रणाली को सर्वश्रेष्ठ प्रणाली माना है, लोकतंत्रा केवल वोट तंत्र तक सीमित होकर रह गया है। जिस दिन मतदाता लंबी–लंबी कतारों में गर्मी–सर्दी सहते, जिंदाबाद–जिंदाबाद करते मतदान करते हैं,उस दिन तो यही लगता है कि लोग अपनी सरकार चुनने जा रहे हैं। लोकतंत्र की जड़े हरी हो रही हैं पर जानने वाले भी जानबूझकर आंखे मूंद लेते हैं कि इन लाइनों में लगने के लिए पचास प्रतिशत से अधिक मतदाता किस–किस रास्ते को पार करके यहां तक पहुंचे हैं। वे बेचारे अपना नेता बनाते हैं, लेकिन उनकी तब क्या हालत होती होगी कि जिसके लिए वे कम से कम तीन सप्ताह तक जिंदाबाद–विजयी हो कहते रहें, चुनाव जीतने के बाद जब वे उस नेता के घर जाएं तो वहां वह झंढा भी दिखाई न दे। संभव है उनके द्वारा चुने गए प्रतिनिधि दल बदलकर किसी अन्य पार्टी के दरवाजे पर सिर झुका रहे हों, नोट बना रहे हों, अथवा अपने ऊपर लगे हुए करोड़ों रुपयों के घपलों के केसों की सत्ता की चकाचौंक में छिपाने और छुटकारा पाने की कोशिश कर रहे हों।

निःसंदेह चुनावों के बाद जो गठबंधन होते हैं, वे स्वार्थ, सत्ता लिप्सा और परिवारों को राजनीति के गलियारों में सुरक्षित स्थान दिलवाने के लिए किए जाते हैं। हरियाणा में भी यह बेमेल गठबंधन सरकार बनाने के लिए हुआ है। वैसे सरकार बननी ही चाहिए अन्यथा प्रांत की जनता पुनः उपचुनावों की चक्की में पिसती।

याद रखना होगा कि कभी हमारे देश में साधनों की शुचिता पर ध्यान दिया जाता था, साध्य गौण था। आज साध य सत्ता हो गई, साधन कितने भी बेईमान क्यों न हो जाएं। कहते हैं कि युद्ध और प्यार में सब जायज है। यहां तो युद्ध भी धर्मयुद्ध होते थे जो सूर्योदय और सूर्यास्त के साथ प्रारंभ

जुआ सुख, संपत्ति और समय इन तीनों का, जो जीवन के लिए अति मूल्यवान है, नाश करता है। –अज्ञात

होते और खत्म होते थे। जहां छिपकर वार करना गुनाह था। अपने देश की संस्कृति को तिलांजलि देकर केवल सत्ता और धन लिप्सा में फंसका किए गए अनेक घपले–घोटाले उन सबसे छुटकारा पाने का अर्थ हो गया कि दल बदलों और सुविधा के स्थान पर पहुंच जाओ। जो लोग चुनाव से कुछ घंटे पहले दल बदलते हैं, उन्हें चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित किया जाए, पर सुनने वाला कोई नहीं क्योंकि सत्तापति ही प्रभावित होते हैं।

संसद में चमचमाते, मुस्कराते और दलबदलू चेहरों को देखकर वितृष्ण होती है। आज की आवश्यकता है कि भारत के लोकतंत्र के स्वामी अर्थात आम जनता अपने प्रतिनिधियों को जांच परखकर चुनें और अगर वे दल बदल लें तो उनका सामाजिक बहिष्कार तो कर ही सकते हैं। अच्छा हो जो व्यक्ति चुनाव लड़े, पहले उसकी परीक्षा तो ली ही जाए कि वह संविधान को कितना जानता है।

हरियाणा की कहानीः हरियाणा में राजनीतिकरण की प्रक्रिया का उदय

– प्रोफेसर रणबीर सिंह

मेयो प्रस्ताव, 1870 द्वारा स्थापित नगरपालिकाओं और रिपन प्रस्ताव 1852 के आधार पर गठित जिला बोर्डों की स्थापना से पूर्व के हरियाणा क्षेत्र में, जिसे उन दिनों दक्षिणी पंजाब की संज्ञा दी जाती थी, शहरी क्षेत्रों की बाकी संख्या पर व्यापारी वर्ग और ग्रामीण क्षेत्रों में परम्परागत ग्राम पंचायतों का तथा खाप पंचायतों का प्रभुत्व था। किंतु प्रांतीय सरकार की 1857 के विद्रोह से चरमराई अर्थव्यवस्था का भार घटाने और स्थानीय स्वशासन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्थापित उन संस्थाओं में एक नया अभिजन वर्ग उभरा जो कि नव शिक्षित वर्ग से संबंधित था। हिसार के जवाहर लाल भार्गव और रोहतक के चौधरी लाल चंद इसी वर्ग से थे। 1909 के मिंटो मोरले सुधारों को जब कांग्रेस की भारतीयों को परिषदों में भागीदारी की मांग को स्वीकार करते हुए जब पंजाब विधान परिषद के चुनाव करवाये गए तो भार्गव नगरपालिकाओं के चुनाव क्षेत्र से और लाल चंद जिला बोर्डों के चुनाव क्षेत्र से दल के सदस्य चुने गए थे। दोनों ने भी परिषद में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। किंतु लालचंद का योगदान तो ऐतिहासिक रहा। मोनटेग्यू चैम्सफोर्ड सुधार लागू करने के लिए भारतीय राज्य अधिनियम (1919) के द्वारा जब प्रांतों में दोहरा शासन स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू हुई तो लालचंद ने मुस्लिम, हिंदू और सिख चुनाव क्षेत्रों को ग्रामीण और शहरी में बांटने की प्रक्रिया में अति महत्वपूर्ण योगदान दिया। यही बांट 1921 के पंजाब विधानपरिषद चुनाव में एक ग्रामीण पार्षदों का समूह उभारने में सफल रही। इन्होंने 1921 में ग्रामीण क्षेत्रों से चुने पार्षदों को संगठित किया। इन्होंने 1923 में मुस्लिम ग्रामीण नेता फजले हुसैन और छोटूराम के नेतृत्व में युनियननिस्ट पार्टी बनाई जिसे जमीदार लीग के नाम से भी जाना जाता था। इसी के प्रतिनिधि लालचंद को 1923 में पंजाब सरकार में मंत्री बनाया गया था। जैलदार मातूराम (सांघी) की चुनाव याचिका स्वीकार हो जाने के बाद लालचंद को मंत्री पद छोड़ना पड़ा था और उनके स्थान पर ही छोटूराम को मंत्री बनाया गया था।

इसी के बाद युनियननिस्ट पार्टी ने ग्रामीण शहरी, व्यापारी, किसान और साहूकार–कर्जदार के मुद्दों के आधार पर पंजाब के मतदाताओं की लामबंदी की थी। हरियाणा में छोटूराम ने अपने साप्ताहिक जाट गजट और जमींदार लीग तथा जाट पक्ष के माध्यम से इस क्षेत्र में कांग्रेस को इस तथ्य के बावजूद हाशिये पर लगा दिया था कि आर्य समाज के प्रभाव के कारण यहां कांग्रेस के नेतृत्व में रौलट एक्ट के विरूद्ध व्यापक हड़तालें हुई थीं। गौरतलब है कि छोटूराम 1916 में रोहतक जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधान थे। लेकिन महात्मा गांधी के सहयोग आंदोलन के समय उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया था। क्योंकि वे भूमि का लगान न देने के महात्मा गांधी के नारे को उस भूमिपति किसान वर्ग के लिए घातक मानते थे जिसके वे प्रतिनिधि थे।

1923 से 1946 तक के समय में हरियाणा में युनियननिस्ट पार्टी का प्रमुख रहा क्योंकि छोटू राम इस क्षेत्र में हिंदू–मुस्लिम, सिख और भूमिपति किसान वर्ग को इस दल के समर्थन में संगठित करने में सफल रहे थे। उन्होंने जाटों, राजपूतों और रोड़ों को ग्रामीण शहरी, किसान, व्यापारी, कर्जदार, साहूकार के मुद्दों पर संगठित करने में सफलता पाई क्योंकि उन्होंने केवल कर्ज माफी के कानून बनाए बल्कि ग्रामीण क्षेत्र और कृषि के विकास को प्राथमिकता भी दी थी। इतना ही नहीं नौकरियों में भर्ती भी कृषकों और गैर कृषकों की संख्या के आधार पर बांट करके करवानी शुरू की जिससे इन जातियों के पढ़े–लिखे वर्ग को प्राथमिकता मिलने लगी। लेकिन 1946 के पंजाब विधानसभा चुनावों में कांग्रेस ने इसका सफाया कर दिया क्योंकि 1945 में चौधरी छोटूराम की मृत्यु के बाद युनियननिस्ट पार्टी हरियाणा में नेतृत्व विहीन हो गई थी। दूसरे स्वतंत्रता के सुनिशिचत हो जाने के बाद और 1942 के

मेहनत की फसल आप ही काटेंगे, सदैव ऐसा नहीं होता। हम आम खाते हैं पर पेड़ हमने नहीं लगाए थे। –लोकमान्य तिलक

भारत छोड़ो आंदोलन के कारण और 1940 में शुरू हुए पाकिस्तान के आंदोलन ने भी इस क्षेत्रीय दल को अप्रासांगिक बना दिया। सुभाष चंद्र बोस की इंडियन नेशनल आर्मी के जवानों में लौटे सैनिकों का भी इस प्रसंग में उल्लेखनीय भूमिका रही। अपने वंशकाल में शुरू हुई हरियाणा की राजनीति का वह युग समाप्त हो गया जिसे 1900 में अंग्रेजों के द्वारा कृषक–गैर कृषक जातियों की बांट, नगरपालिकाओं और जिला बोर्डों के निर्माण, आर्य समाज की भूमिका, प्रथम महायुद्ध के बाद उभरे सैनिक वर्ग और 1911 में दिल्ली के राजधानी बनने के बाद उभरे पढ़े लिखे वर्ग ने शुरू किया था।

अगले अंक में पढ़ें: स्वतंत्रता और विभाजन का हरियाणा की राजनीति पर प्रभाव

भारत में टिड्डी दल के आक्रमण का अवलोकन

वर्ष 2020 प्रकृति की चेतावनी के रूप में हमारे सामने हैं। प्रकृति का गुस्सा एक के बाद एक घटनाओं के रूप में जैसे कि कोविड महामारी,तटीय क्षेत्र में अमफ़न चक्रवात का आना, और अब टिड्डी दल के भीषण आक्रमण के रूप में दर्शित हो रहा है। टिड्डी हर साल राजस्थान के कुछ हिस्सों में फ़सलो को नुक़सान पहुंचाती है। वर्तमान में भारत के पाँच राज्यों में एक टिड्डी दल के आक्रमण से फसलों को भारी नुक़सान होने की आशंका है।टिड्डी एक दिन में 100–150 किलोमीटर की दूरी तय कर सकती है। टिड्डी दल सामूहिक रूप से करोड़ों की संख्या में झुंड या समूह बनाकर आगे बढ़ती जाती है। इनके समूह को स्वार्म(ूतउ) कहा जाता है। एक वर्ग़ किलोमीटर क्षेत्रफल में व्यस्क टिड्डी की संख्या 80 मिलियन तक हो सकती है।टिड्डी का एक समूह पच्चीस सौ आदमी, 10 हाथी, 25 ऊंट के बराबर खाना खा जाती है। प्राय टिड्डी दल शाम के समय झुंड में पेड़ों, झाड़यिों एवं फसलों पर बसेरा करते हैं और रात वहीं गुज़ारते हैं इसके बाद सूरज निकलने के बाद अपने स्थान से उड़कर फ़सल को नष्ट करना शुरू कर देते हैं। भारत में मुख्यतघ इनकी चार स्पीशीज पाई जाती है।

1. डेज़र्ट टिड्डी (क्मेमतज स्वबनेज)
2. मायग्रटॅारी टिड्डी (डपहतंजवतल स्वबनेज)
3. बॅाम्बे टिड्डी ठवउइंल स्वबनेज
4. वृक्ष टिड्डी (ज्तमम स्वबनेज)

टिड्डी दल के उत्पन होने के कारण भारत में वर्तमान टिड्डी दल आक्रमण मुख्यत डेज़र्ट स्पीसीज़ के कारण है। डेजर्ड टिड्डी सऊदी अरेबिया ओर पूर्वी अफ्रीका की नेटिव मानी जाती है। जलवायु परिवर्तन के कारण सऊदी अरेबिया में पिछले दो वर्षों में चक्रवात (ब्लबसवदम) लगातार आ रहे हैं– इसके कारण टिड्डी दल को ग्रोथ और जनन की अनुकूल स्थितियां मिल जाती है। इसके अतिरिक्त चक्रवात विंड पैटन(ूपदक चंजजमतद) को भी चेंज कर देते हैं।हिन्द महासागर द्विध्रुवीय(प्दकपंद वबमंद कपचवसम) के कारण असामान्य वर्षा ओर ग्लोबल वार्मिंग के कारण बढ़ता तापमान भी इनकी ग्रोथ की अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न करता है। इसके अतिरिक्त इस वर्ष दक्षिणी पूर्वी ईरान और दक्षिणी पश्चिमी पाकिस्तान मैं जनवरी महीने में काफ़ी ज़्यादा बारिश हुई। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार एक मार्च से 11 मई तक भारत में सामान्य से 25: अधिक बारिश हुई है। राजस्थान में पश्चिमी विक्षोभ के कारण बारिश होने के कारणभी डेज़र्ट टिड्डी दल ने भारत के पश्चिमी भाग में फसलों पर जल्दी आक्रमण किया है।

ऐतिहासिक मूल्यांकन 1926–31 के प्लेग साइकल के दौरान इनके आक्रमण के कारण 10 करोड़ की फसलों को नुक़सान हुआ था। इससे पहले 1940–46,1949–55 ओर 1959–62 के दौरान भी इनके आक्रमण के कारण फ़सल को भारी नुक़सान हुआ है।1993 के दौरानपश्चिम राजस्थान के 31000 हेक्टेयर क्षेत्रफल में टिड्डी स्वार्म(ूतउ) ने फ़सलो पर आक्रमण किया था। पश्चिमी राजस्थान ओर गुजरात के कुछ हिस्सों में 1997 ओर 2005 मैं भी इनका फसलों पर आक्रमण हुआ है। तीन दशकों के बाद इस साल टिड्डी दल कहाँ आक्रमण काफ़ी व्यापक स्तर पर है। टिड्डी दल का नियंत्रण भारत में घास फूस और खरपतवार के पत्तों पर आग जलाकर धुआँ उठने से इनके दल को दूर भगाए जाता है। इसके अतिरिक्त ढोल बजाकर, लोहे के पीपों से तेज़ आवाज़ कर भी इनको दूर भगाए जाता है। कुछ किसान ट्रैक्टर के साइलेंसर को खोलकर खेत में घुमाने पर ज़ोर से आवाज़ कर भी इनको भगाते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के फूड एंड ऐग्रिकल्चर ऑर्गनाइजेशन अप्रूव्ड इन्सेक्टिसायड (बीसवतचलतपवि –बलचमतउमजीतपद/कलोरोपयरिफ़ोस ओर साईपरमेतरिण) कहाँ उचित अनुपात में घोल बनाकर स्प्रे करने पर भी इनका नियंत्रण किया जा सकता है। रासायनिक तरीक़ों के अलावा बायलॅाजिकल तरीक़े अपनाकर भी टिड्डी दल पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

सऊदी अरेबिया जैसे देशों में एयरक्राट से इन्सेक्टिसायड का स्प्रे कर भी इन का नियंत्रण किया जा सकता है। ड्रोन बेस इन्सेक्टिसायड का स्प्रे करने पर जैव विविधता को भारी नुक़सान हो सकता है इस कारण भारत सरकार ने अभी इसको मान्यता नहीं दी है। समय रहते हैं इनके मूव्मेंट को ट्रेंक करते हुए ओर विभिन्न विभागों में आपसी सामंजस्य भी इनके

दुनिया बहुत कष्ट सहती है। बुरे लोगों की हिंसा के कारण नहीं, बल्कि अच्छे लोगों के मौन के कारण। –नैपोलियन

नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। टिड्डी दल के प्रभाव टिड्डी दल अपने रास्ते में आने वाली प्रत्येक हर एक चीज़ जैसे की ख़ारीद खड़ी फ़सलें,पशुओं के चारागाह, फलों के बग़ीचे और यहाँ तक कि वनो को भी चर कर जाते हैं।महाराष्ट्र,उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों में टिड्डी दल के आक्रमण के कारण आम के बगीचों पर असर हो सकता है जिसके कारण वहाँ के किसानों की आजीविका प्रभावित होगी। भारत के रेगिस्तानी हिस्सा में टिड्डी दल के आक्रमण के कारण न केवल फसलों को अपितु पशुओं के चारागाह पर असर होने के कारण किसानों तक यह दोहरी मार हो सकती है। अतः समय आ गया है कि मनुष्य जाति प्रकती की चेतावनी का विभिन्न परिपेक्ष्य में मूल्यांकन करें ताकि हमारे आने वाली पीढ़ियां पर इन प्राकृतिक और मानवीय आपदाओं का असर कम हो सके। लेखक भारतीय वन्य सेवा के अधिकारी हैं।

ये जिन्दगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा

– डॉ० कर्मवीर सिंह

एक बार एक कवि किसी रास्ते से गुजर रहा था। रास्ते में उसने एक वश्क्ष को जलते हुए देखा। वश्क्ष की टहनी पर बैठे हुए दो पक्षियों को वश्क्ष के साथ जलते हुए देखकर कवि का कोमल मन द्रवित हो उठा। सहसा कवि के मुंह से ये शब्द फूट पड़ेः
"आग लगी इस वश्क्ष में, जलने लागै पात।
पक्षियों तुम क्यों जलो, जब पंख तुम्हारे साथ।।"

कवि के ये शब्द सुनकर पक्षियों ने जो मर्मस्पर्शी उत्तर दिया, उसकी ओर पाठकों का ध्यानाकर्षण अपेक्षित है। जलते हुए पक्षियों ने कवि से कहा :–
"फल खाए इस वश्क्ष के, गन्दे कीने पात।
आग लगी इस वश्क्ष में, जल मरें इसी के साथ।।"

पक्षियों द्वारा उस पेड़ के प्रति दर्शायी गई श्रद्धा, उनकी बहादुरी, बलिदान की भावना, समर्पण का भाव, त्याग की पराकाष्ठा और सर्वस्व न्योच्छावर करने की प्रतिज्ञा किसको भाव–विभोर होने से रोक सकती है? कौन होगा ऐसा मानव जिसका मन उपर्युक्त वार्तालाप सुनने के पश्चात द्रवीभूत न होगा?

जब मनुष्य के इतर प्राणियों में अपने आवास के प्रति समर्पण की ऐसी भावना हो सकती है। तो मानव जाति में क्यों नहीं? प्रश्न इस बात का है कि हम अपनी जाति (मानव जाति) के प्रति कितने वफादार हैं, अपनी कौम (जाट) के प्रति कितने समर्पित हैं और क्या हम जाट होने का फर्ज बखूबी निभा रहे हैं?

किसी कवि ने लिखा है, "ये जिन्दगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा।" कौम के लिए कार्य करना और जातिवादी सोच रखना सैद्धान्तिक रूप से अलग हैं। जहां एक और जातिवाद का अभिप्राय अन्य जातियों का दमन व शोषण करके अपने विकास का रास्ता प्रखर करना हैं, वहीं दूसरी ओर कौम के लिए कर्मरत होने का अर्थ है – सभी जातियों को सम्मानजनक दृष्टि से देखते हुए अपनी कौम को विकसति करने के लिए प्रयासरत होना। इस प्रकार जिस कौम में हमने जन्म लिया है, उसके उत्थान के लिए, उसके विकास के लिए, उसकी भलाई के लिए और उसके सुनहरे भविष्य के लिए कृत–संकल्प होकर कार्य करते रहना कतई जातिवाद नहीं है।

इसे विधि की विडम्बना कहूँ या व्यवस्था का विधान कि दुर्भाग्यवश जाति का संबंध जन्म से जोड़ दिया गया है। दुनियां की सबसे बड़ी जम्हूरियत होने के बावजूद हिन्दुस्तान में धर्म परिवर्तन सम्भव है, जाति परिवर्तन नहीं। सही मायने में जातियां केवल दो वर्गो में वर्गीकृत की जा सकती हैः एक कमेरे की जाति व दूसरी लुटेरे की जाति। समाज की वर्तमान व्यवस्था में जिसे 'जाट' जाति का नाम दिया गया है, वह जाति सदैव कमेरे वर्ग की जाति रही है। इस जाति के मापदण्ड–शौर्य, पराक्रम, त्याग, परिश्रम व दान रहे हैं।

सत्यार्थ प्रकाश में पाखण्ड खण्डन करते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती जी भी जाट को 'देवता' कहकर सम्बोधित करते हैं। देवता का साधारण सा अर्थ–देने वाला है। इसका विपरित हुआ लेने वाला अर्थात 'लेवता'। जाट कभी भी 'लेवता' नहीं हो सकता वह सदैव 'देवता' रहा है और हमेशा बना रहेगा। इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि जाट कौम कभी दूसरों से मांगने में विश्वास नहीं रखती। यहाँ तक भी कहा जाता है कि जाट को तो मांगना आता ही नहीं। और सत्य है कि हमें न मांगना आता है, न ही हम मांगना चाहते हैं।

बड़े खिन्न मन से लिखना पड़ रहा है कि आज पाश्चात्यीकरण के अन्धानुकरण में डूबकर कुछ तथाकथित शिक्षित जाट भाई–बहन अपने बच्चों को उनकी जाति/कौम ही बताना भूल गए हैं। या यूँ कह लीजिए कि वे इस डर से अपने बच्चों को उनकी जाति का बोध नहीं करा रहे कि कहीं उनके बच्चों को कोई 'जाट' कहकर अपमानित न कर दे। ऐसे भाई–बहनों से मेरी अपील है कि वे अपने बच्चों को निर्भीक व निडर बनाएँ, उनमें ऐसी शक्ति विकसित करें कि वे स्वयं को 'जाट' कहने पर गौरवान्वित महसूस करें। वे सीखें कि 'जाटणी' 'सिंहणी' का पर्याय है। उनको बताएँ कि JAT stands for Justice, Action and Truth.

स्वयं को 'जाट' कौम का अंश पाकर गौरवान्वित होने के पश्चात् कर्तव्य–बोध का प्रश्न आता है। इस लेख के आरम्भ में ही जिस समर्पण भाव का उल्लेख किया गया है, उस समर्पण भाव से हर कौम की सेवा करें। अपने बालकों को सरदार भगत सिंह, महाराजा सूरजमल, चौ० छोटूराम व सेठ छज्जूराम के किस्से

विचार का चिराग बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है। –बिनोवा भावे

सुनाकर उनकी रगों में बह रहे रक्त की धार को प्रखर बनाने का पुण्य कार्य करें। ऐसा वातावरण विकसित करें कि हमारा बच्चा–बच्चा गर्व व फक्र से कह सके "मैं जाट हूँ और मुझे जाट होने पर गर्व है।"

आईये, अब थोड़ा अन्तरावलोककन करें – जरा सोचिए! जाट कौम में जन्म लेकर मैने कौम के लिए क्या किया है? जाट ऐसे ही दूसरे प्रश्न स्वयं से करें। उत्तर की पड़ताल कीजिए और कौम के जज्बे की लाज को बरकरार रखने के लिए आज से ही अपना सुनिश्चित योगगदान देना शुरू करें क्यों –

"ये जिदंगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा।"

हाँ, यह कदापि न भूले कि सहनशीलता, दया व त्याग वीरों के आभूषण होते हैं। 'जाट' सर्वश्रेष्ठ वीर है तो स्वाभाविक रूप से उसे धैर्यवान व त्यागी तो बनना ही होगा।

युवा शक्ति के प्रेरणास्रोत : स्वामी विवेकानंद

– शक्ति सिंह, एडवोकेट करनाल

कलकत्ता नगर में प्लेग महामारी का प्रकोप था। प्रतिदिन सैकड़ों व्यक्तियों पर उसका आक्रमण हो रहा था। महामारी के कारण नगर में अफरा–तफरी सी मची हुई थी। स्वामी विवेकानंद उस समय विदेशों में भारतीय संस्कृति की ध्वजा फहरा कर कलकत्ता आये ही थे। वे अपने देशी विदेशी सहयोगियों के साथ 'बेलूड़' में रामकृष्ण परमहंस मठ की स्थापना की योजना में संलग्न थे। लोगों पर इस घोर विपत्ति को आया देखकर मठ की योजना छोड़कर कर्मक्षेत्र में कूद पड़े और बिमारों की चिकित्सा एवं नगर की सफाई की बड़ी योजना बना डाली। एक गुरु भाई ने उनसे पूछा– स्वामी जी? इतनी बढ़ी योजना के लिए धन कहां से आयेगा? स्वामी जी ने तुरंत उत्तर दिया, जरूरत पड़ेगी तो मठ के लिए जो जमीन खरीदी है उसे बेच डालेंगे। सच्चा मठ तो सेवा कार्य ही है। हम सन्यासियों को तो सदैव सेवाधर्म निभाने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

सेवा व्रत को इतना उच्च स्थान देने वाले स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 ई. में कलकत्ता के मध्यम श्रेणी परिवार में हुआ। 19वीं शताब्दी के अंत में जिन महापुरुषों ने राष्ट्रवाद की अलख जगाई थी स्वामी विवेकानंद का नाम उनमें अग्रणी है। अंग्रेजी शिक्षा पाने वाला नरेंद्रनाथ (बचपन का नाम) अंग्रेजीयत के रंग में रंगने की बजाय आत्मा–परमात्मा संबंधी जिज्ञासाओं के समाधान में लगा रहता था। इन्हीं जिज्ञासाओं ने इनको दक्षिणेश्वर के प्रसिद्ध एवं रिक्त संत रामकृष्ण परम हंस से जोड़ा। परम हंस से इनका मिलन गुरु शिष्य का दिव्य मिलन साबित हुआ। नरेंद्र को उस समर्थ गुरु एवं परमहंस को एक सुयोग्य शिष्य मिल गया था। परमहंस ने नरेंद्र की ईश्वर संबंधी जिज्ञासा का तो समाधान किया ही साथ ही उन्हें भक्ति, ज्ञान और वैराग्य का ऐसा दिव्य वरदान भी दे दिया जिससे नरेंद्रनाथ ने 'विवेकानंद' बनकर समस्त विश्व में भारतीय संस्कृति के गौरव की पताका को फहराया।

1888 ई. में स्वामी विवेकानंद देश भ्रमण के लिए निकले देश के कोने–कोने में जाकर भारत के असली स्वरूप के दर्शन किए। इन्होंने अनुभव किया कि भारतवर्ष से सच्ची आध्यात्मिकता लुप्त हो गई है, अज्ञानता और भूख का भूत सर्वत्र धूम रहा है। भारतवर्ष का खोया गौरव लौटाने के लिए प्रबुद्धजनों को कड़ी मेहननत करनी होगी। अपनी यात्रा के दौरान स्वामी जी ने सच्ची आध्यात्मिकता का संदेश लोगों को दिया। स्वामी जी संपूर्ण देश का भ्रमण करके और छोटे–बड़े सैकड़ों प्रसिद्ध व्यक्तियों से वार्तालाप करके इस निश्चय पर पहुंचे कि एक बार देश से बाहर जाकर अर्थात पाश्चात्य देशों में हिंदू धर्म के उच्च सिद्धांतों का प्रचार किया जाए। जिससे एक और तो विदेशों के अध्यात्मक प्रेमी व्यक्ति भारतवर्ष की ओर आकर्षित हो और दूसरी ओर जो हमारे शिक्षित युवा विदेशी सभ्यता की चकाचौंध से प्रभावित होकर अपनी संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं उनकी भी आंखें खुलें। इसी दौरान मद्रास में उनको सूचना मिली की अमेरिका में एक सर्वधर्म सभा होने वाली है और उसमें अभी तक हिंदू धर्म की ओर से कोई प्रतिनिधि नहीं गया। स्वामी जी को अपनी अंतरात्मा से यह प्रेरणा हुई कि इस अवसर पर उनको अन्य धर्मावलंबियों के समक्ष हिंदू धर्म के झंडे को ऊंचा करना चाहिए।

31 मई 1893 को भारतीय संस्कृति का ये अग्रदूत अमेरिका यात्रा के लिए निकला। 11 सितंबर 1893 को शिकागो में आयोजित सर्व–धर्म सभा में स्वामी विवेकानंद ने ऐसा प्रभावशाली उद्‌बोधन दिया था, जिससे विवेकानंद की तो जय–जयकार हुई ही थी साथ ही भारतीय अध्यात्मक एवं दर्शन को ठीक से समझने का अवसर विश्व के अन्य धर्मावलंबियों को मिला था। स्वामी जी का शिकागो भाषण असल में केवल शब्दों का गुंथन या वाणी का चातुर्य न होकर सच्चे भारतीय साधु के चिंतन, चरित्र एवं आचरण की प्रस्तुति थी। केवल शिकागों में ही नहीं बल्कि पूरे अमेरिका में विवेकानंद के नाम की जय–जयकार होने लगी थी, अनजान सा ये साधु अब अमेरिका में भारतीय नायक बन गया था। अमेरिका के बाद इंग्लैंड एवं यूरोप के अन्य देशों में स्वामी जी ने भारतीय संस्कृति का प्रभावशाली तरीके से प्रचार किया। इतनी प्रसिद्धि पाकर भी विदेशी चकाचौंध उनको अपनी ओर आकर्षित न कर पाई, उनकी आंखों के सामने तो सदैव भारत की भूखी एवं अशिक्षित जनता की तस्वीर रहती थी और इस दूर्दशा को दूर करने की योजना वे बनाते रहते थे। इस प्रकार लगभग चार वर्ष तक

दुनिया का अस्तित्व शस्त्र बल पर नहीं, सत्य, दया और आत्मबल पर है। –महात्मा गांधी

यूरोप एवं अमेरिका में भारतयी संस्कृति का ध्वज फहराकर तथा हजारों पश्चिमी लोगों को वेदांत का अनुयायी बनाकर स्वामी जी स्वदेश लौटे। स्वामी जी के साथ उनके कई विदेशी अनुयायी भी भारत आये थे और यहीं पर रहकर सेवा कार्यों में समर्पित हो गए थे। मिस नोबल (बाद में भगिनि निवेदिता) उनमें से प्रमुख थीं। स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन के अंतर्गत देशभर में अनेकों मठ स्थापित करवाए, जिनमें ईश्वर की उपासना तथा दीन दुखियों की सेवा की जाती थी।

स्वामी जी ने जहां विदेशों में वेदांत का प्रचार करके उन्हें भोगवादी संस्कृति के दुष्परिणामें से सचेत किया वहीं भारत में अध्यात्मक को सेवा कार्यों से जोड़कर अन्य सन्यासियों को भी यही प्रेरणा दी कि वर्तमान समय समाधी लगाने एवं योग साधने का नही बल्कि भारतीय जनता को शिक्षित एवं जागृत करके उनको समर्थ, सशक्त, स्वावलंबी एवं राष्ट्रभक्त बनाने का है। इस तरह से स्वामी जी ने वेदांत को जन सेवा से जोड़कर व्यवहारिक अध्यात्मवाद का क्रांतिकारी संदेश दिया। इनके उज्जवल चरित्र एवं प्रखर ज्ञान से प्रेरणा लेकर अनेकों युवक युगधर्म को पहचानते हुए स्वाधीनता संग्राम में समर्पित हो गये थे।

4 जुलाई 1902 में इस महायोगी ने ध्यानावस्था में बैठे–बैठे शरीर का त्याग कर दिया था। अपनी अलपायु में वे इतना महान कार्य कर गए जिसको जन साधारण सैंकड़ों वर्षों में भी नहीं कर सकता। स्वामी जी का तपोमय एवं त्यागमय जीवन आज भी धर्मपरायण व्यक्तियों के लिए प्रेरणा स्रोत है। पाश्चात्यवाद की अंधी होड़ में लगी हुई युवा शक्ति के लिए तो स्वामी जी का जीवन चरित्र विशेष रूप से अनुकरणीय है।

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के राजनैतिक संघर्ष व परिणाम

– डॉ. आर.के. राणा, हिसार

चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसंबर 1902 को नूरपुर गांव, जिला मेरठ के किसान परिवार मीर सिंह तेवतिया के घर हुआ था। उनका परिवार हरियाणा के बल्लभगढ़ के परम वीर राजा नाहर सिंह तेवतियों घराने से सम्बन्ध रखता है जो सन् 1857 के प्रथम स्वतत्रत्रंता संग्राम के महानायक थे। इनके पूर्वज वहां से आकर नूरपुर में बस गए थे। चौधरी चरण सिंह ने उच्च शिक्षा ग्रहण की व आगरा विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री प्राप्त करने के बाद सन् 1928 में गाजियाबाद में वकालत शुरू की। वह एक मेहनती व ईमानदार वकील थे व वही केस हाथ लेते थे जिसमें सच्चाई हो और न्याय दिलाया जा सके। इससे उनकी आम जनता में प्रसिद्ध हो गई।

jk tuhfr e dne ½

क्योंकि चौधरी चरण सिंह एक साधारण किसान के बेटे थे, वह किसानों की गरीबी व अन्य समस्याओं को अच्छी तरह से समझते थे। किसानों की सब तकलीफों को दूर करने और उन्हें खुद जमीन का मालिक बनने व अपने पैरों पर खड़े होने के लिए एक सच्चे किसान नेता की जरूरत थी। चौ. चरण सिंह एक साहसी, निर्भीक और सत्य न्याय पथ पर चलने वाले इन्सान थे। वह स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन से प्रभावित थे और आर्य समाज के सिद्धान्तों को मानते थे। वह महात्मा गाँधी व सरदार पटेल से भी प्रभावित थे, इसलिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए और स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े और इसके लिए कई बार जेल भी गए।

foèkku lHkk pquko o e=h in½

वह सन् 1937 में विधान सभा के सदस्य चुने गए उन्होंन किसानों को साहूकारों के चंगुल से छुड़ाने और उनकी आर्थिक स्थिति ठीक करने के लिए प्रयास शुरू कर दिया। सन् 1938 में कृषि उत्पादन व मार्किट बिल सदन में पेश किया जिसके कानून बनने से किसानों का मंड़ी में व्यापारियों द्वारा शोषण बन्द हो गया। उन्हें मुख्यमंत्री गोविन्द बल्लभ पंत की सरकार में रेवेन्यू मंत्री बनाया गया और उन्होंने किसान हित में क्रांतिकारी भूमि सुधार किए व उनको मालिकाना हक दिलवाया।

जब उन्होंने प्रथम प्रधानलमंत्री जवाहर लाल नेहरू का सयुंक्त कृषि योजना का 1959 में विरोध किया तो राष्ट्रीय स्तर पर पहचान हो गई और वह किसानों के बड़े नेता के तौर पर जाने गए।

jktuhfrd ?kVukØe dk çHkko o egRodka{kk½

27 मई 1964 को प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू का स्वर्गवास हो गया और लाल बहादूर शास्त्री देश के प्रधानमंत्री बन गए। वह सीधे सादे इन्सान थे तथा गरीब जनता व गांव तथा किसान हित के बारे सोच रखते थे। उन्होंने सन् 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध के दौरान जय जवान, जय किसान का नारा दिया था। चौ. चारण सिंह को यह बहुत पसंद आया और वह शास्त्री जी के प्रशंसक हो गए। उन्होंने बड़े स्तर पर किसानों की सेवा करने की ठान ली। वह विशेष रूप से गांव के लोगों के आर्थिक सुधार की बातें करते थे व जाति–पाति तथा पंथ से ऊपर उठकर सब को समान समझते थे।

युद्ध की समाप्ति के बाद लाल बहादुर शास्त्री ताशकन्द समझौते के बाद अचानक ह्रदय गति रूकने से 11 जनवरी 1966 को स्वर्ग सिधार गए व श्रीमती गाँधी को प्रधानमंत्री बना दिया । चौ. चरण सिंह को यह घटनाक्रम बड़ा अनहोना लगा। वह जानते थे कि लाल बहादुर शास्त्री देश की गरीबी व गांव की दशा को अच्छी तरह समझते हैं और देश को अच्छी दिशा में आगे ले जाएंगे। परन्तु उनका यह स्वप्न अधूरा ही दिखाई देने लगा। चौ. चरणसिंह बहुत साहसी, निर्भीक व ऊँचे इरादों के इन्सान थे। उन्होंने अपनी मंजिल को तय किया अंजाम देने के प्रयास शुरू कर दिए।

दूसरों के अनुभव से होशियारी सीखने की मनुष्य की इच्छा नहीं होती, उसको स्वतंत्र ठोकर चाहिए। –विनोबा भावे

मुख्यमंत्री पद : सन् 1967 देश में चुनाव हुए इसमें विधान सभाओं व लोकसभा के चुनाव इकट्ठे हुए। चौ. चरण सिंह अभी कांग्रेस में ही थे। वह विधान सभा चुनाव जीते व उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री बने। उनकी मुख्यमंत्री से कुछ नीतियों के कारण अनबन रहने लगी और उन्होंने मंत्रीमण्डल से त्याग पत्र दे दिया व अलग पार्टी भारतीय क्रांतिदल का गठन किया। कुछ विधायक उनके साथ आ गए और राजनारायण व राममनोहर लोहिया के साथ मिलकर विधान सभा में बहुमत का दावा पेश किया व अप्रैल 1967 में मुख्यमंत्री बन गए।

Jherh bfnjk xka/kh dh gB jktuhfr%

कांग्रेस नेतृत्व ने श्रीमती इंदिरा गांधी को इसलिए प्रधानमंत्री बनाया था कि वह वरिष्ठ नेताओं की बात मानकर देश का शासन चलाएगी। परन्तु उन्होंने अपनी तरह से काम करना शुरू कर दिया। या तो उनके सलाहकार ही ऐसी सलाह देते थे या व खुद ही बड़ी हठीली हो गई व किसी विरोध को सहन नहीं करती थीं। उन्होंने अपनी मर्जी के मुख्यमंत्री, राज्यपाल व राष्ट्रपति पद पर चयन शुरू कर दिया जिससे राजनैतिक व संवैधानिक सत्ता का केन्द्रीकरण हो गया।

सबसे पहले उन्होंने हरियाणा में मार्च 1967 से बहुमत की राव विरेन्द्र की हरियाणा विशाल पार्टी की सरकार नवम्बर 1967 में राष्ट्रपति शासन लगाकर बर्खास्त किया। फिर अप्रैल 1967 में भी चौ. चरण सिंह की सरकार को राष्ट्रपति शासन लगाकर फरवरी 1968 में बर्खासत कर दिया। फिर फरवरी 1970 से अक्तूबर 1970 तक चौ. चरण सिंह मुख्यमंत्री रहे, परन्तु फिर राष्ट्रपति शासन द्वारा बर्खासत कर दिया। इस तरह श्रीमती इंदिरा गांधी और चौ. चरण सिंह एक दूसरे के राजनैतिक विरोधी हो गए।

श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने वरिष्ठ कांग्रेसी राष्ट्रपति उम्मीदवार श्री नीलम संजीवा रेड्डी के मुकाबले उप–राष्ट्रपति श्री वी.वी. गिरी (स्वतंत्रता उम्मीदवार) को अगस्त 1969 में राष्ट्रपति बनवाया, जिससे खफा होकर कांग्रेस उच्च कमान ने श्रीमती इंदिरा गांधी को कांग्रेस पार्टी से निकाल दिया। परन्तु लोकसभा में बहुमत मिलने के कारण वह प्रधानमंत्री बनी रही तथा अगले चुनाव 1971 में भी जीतकर 1975 तक प्रधानमंत्री रही।

Hkkjrh; jktuhfr esa rwQku%

श्रीमती इंदिरा गांधी के खिलाफ 1971 के चुनाव में हारे श्री राजनारायण ने धांधली के आरोप लगाकर इलाहाबाद उच्च न्यायालय में मुकदमा दायर किया। इसकी सुनवाई चार साल तक चली और कोर्ट ने इंदिरा गांधी को सरकारी मशीनरी के दुरूपयोग का दोषी पाया और 12 जून 1975 को उनके खिलाफ फैसला सुनाया व सांसद का चुनाव खारिज कर दिया। इससे कांग्रेस खेमे में खलबली मच गई। कांग्रेस पार्टी ने उनके हक में रैलियां निकाली व विरोधी नेताओं ने खिलाफ में आन्दोलन कर दिया। इससे देश में राजनैतिक संकट छा गया। समाज सेवी नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने श्रीमती इंदिरा गांधी से पद से त्यागपत्र देने की मांग की। इंदिरा गांधी असमंजय की स्थिति में थी कि क्या करें। उन्होंने 25 जून 1975 को वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं की बैठक बुलाई। उसमें श्रीमती इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री बने रहने का फैसला हुआ और देश में आपातकालीन घोषणा कर दी। उसी रात सारे विरोधी नेताओं को गिरतार करके दूर–दूर जेलों में डाल दिया। जिनमें राजनारायण, जयप्रकाश नारायण, चौ. चरण सिंह, अटल बिहारी वाजपेयी, लाल कृष्ण आडवाणी, मोरारजी देसाई, विजय राजे सिधिंया, जे.कृपलानी, गायत्री देवी आदि सैंकड़ों विरोधी नेता थे। इससे सारे देश में भय का वातावरण बन गया। देश व प्रशासन प्रधानमंत्री दफ्तर से नहीं बल्कि प्रधानमंत्री निवास से चलाया जाने लगा। एक तरह से तानाशाही सत्ता देश में काम करने लगी। मानव अधिकार, न्याय प्रणाली व प्रैस की आजादी पर अंकुश लग गया। उनके छोटे बेटे संजय गांधी व उनकी कोठरी ने अपनी मनमर्जी चलानी शुरू कर दी। दिल्ली में जो चाहा किया। किसी के मकान तोड़ दिए, विरोध करने पर जेल में डाल दिए। जबरदस्ती लोगों की नसबंदी शुरू कर दी। अन्य राज्यों में भी कांग्रेसी मुख्यमंत्रियों ने ऐसा ही रूख अपनाया। इससे जनता बहुत परेशान हो गई और जगह–जगह विरोध में जनता खड़ी हो गई। आखिरकार इंदिरा गांधी ने 18 महीने बाद 18 जनवरी 1977 में आपातकालीन स्थिति समाप्त कर दी और सभी नेताओं को जेल से रिहा कर दिया।

lu~ 1977 dk pquko ifj.kke%

मार्च 1977 में लोकसभा के आम चुनाव कराए गए। कांग्रेस पार्टी को अपनी जीत का भरोसा था। परन्तु आपातकाल की ज्यादतियों से देश की जनता परेशान हो गई थी। सारे विरोधी नेता इकट्ठे हो गए। जय प्रकाश नारायण ने उनको एक संगठन बनाने को कहा ताकि कांग्रेस पार्टी को हराया जा सके और देश को तानाशाही से छुटकारा मिले व प्रजातंत्र का राज स्थापित हो। सभी दलों ने मिलकर एक जनता पार्टी का गठन किया और चुनाव लड़े। इसमें जनता पार्टी को पूर्ण बहुमत मिला और कांग्रेस पार्टी की करारी हार हुई। पुराने कांग्रेसी नेता श्री जगजीवन राम व अन्य ने चुनाव के दौरान कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया था व जनता पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ा था व जीत हासिल की। इस चुनाव में श्रीमती इंदिरा गांधी भी राय बरेली से श्री रायनारायण से हार गई थीं।

dsUnz esa ubZ ljdkj dk xBu%

24 मार्च 1977 को नई संसद का गठन हुआ। अब जनता पार्टी गठबंधन को नेता चुनने की चुनौती थी। बड़े–बड़े नेता मोरारजी देसाई, चौ. चरण सिंह, श्री जगजीवन राम आदि इस दौड़ में थे। श्री जय प्रकाश नारायण व श्री जे.कृपलानी भी सदन में आए। उन्होंने सब से विचार–विमर्श करके सबसे बुजुर्ग व अनुभवी नेता मोरारजी देसाई को प्रधानमंत्री बनाने का निर्णय लिया जिसे सब ने मान लिया और नए मंत्रीमंडल का गठन किया गया। इसमें चौ. चरण सिंह गृहमंत्री, श्री जगजीवन राम को रक्षामंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेई को विदेशमंत्री व राजनारायण को स्वास्थ्य मंत्री बनाया गया तथा अन्य मुख्य नेता मंत्री बनाए गए। इस तरह सरकार का गठन हो गया। देश की जनता ने राहत की सांस ली कि अब सरकार पांच साल शांतिपूर्वक अच्छे काम करेगी और जनता की परेशानियां दूर होगी।

विचारकों को जो चीज आज स्पष्ट दिखती है, दुनिया उस पर अमल करती है। –विनोबा भावे

pk- pj.k flg dh cny dh dk;okgh%

जब केन्द्र में जनता सरकार बन गई तो चौ. चरण सिंह ने इंदिरा गांधी की तानाशाही नीतियों व कार्यों का बदला लेना शुरू कर दिया। उन्होंने मंत्री मण्डल से प्रस्ताव पास कराया कि देश में जितनी कांग्रेसी सरकार है, उनको भंग कराकर चुनाव कराए जाएं। कार्यवाहक राष्ट्रपति श्री बी.डी. जत्ती ने इस प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया। इससे सरकार में व जनता में रोष फैल गया और जुलूस निकलने लगे। चौ. चरण सिंह राष्ट्रपति को समझाने गए कि मंत्री मंडल की सिफारिश तो राष्ट्रपति को माननी पड़ती है। राष्ट्रपति ने कहा कि बहुमत की ठीक तरह से काम कर रही इतनी सरकारों को भंग करना न्यायसंगत नहीं। इस पर चौ. वरणसिंह ने कहा कि जब इंदिरा गांधी बगैर कांग्रेस सरकारों को भंग करा देती थी तब वह फैसला न्यायसंगत थे। और जब देश में आपातकालीन स्थिति लागू की गई क्या वह न्याय संगत थी। अब अगर आप हस्ताक्षर नहीं करते और देश में न्याय व्यवस्था खराब होती है तो इसके लिए आप जिम्मेवार होंगे। श्री बी.डी. जत्ती सरल स्वाभाव के थे उन्होंने ज्यादा बहस न करके प्रस्ताव पर हस्ताक्षर कर दिए। इस तरह राज्यों में कांग्रेस सरकारें बर्खास्त हो गई और फिर चुनाव के बाद जनता पार्टी की सरकारें बन गई।

अब चौ. चरण सिंह ने आपातकाल में कांग्रेस सरकार द्वारा विरोधियों के खिलाफ की ज्यादतियों का बदला लेने की ठान ली। उन्होंने उन पर मुकदमें चलाने के लिए मंत्री मण्डल से विशेष अदालत का गठन करने का प्रस्ताव पास कराया। हालांकि मोरारजी देसाई इस हक में नहीं थे। वह शांतिपूर्वक अपनी सरकार चलाना चाहते थे। विशेष अदालतें गठित हुई और कार्यवाही शुरू हुई। श्रीमती इंदिरा गांधी व उनके पुत्र संजय गांधी को आधी रात को गिरतार किया गया। इससे कांग्रेस खेमें में बड़ा हल्ला हुआ। मुकदमें शुरू हो गए। उनको जमानत मिल गई थी। मोरारजी देसाई व मंत्री मण्डल के अन्य सदस्य चौ. चरण सिंह की नीतियों से सहमत नहीं थे और अनबन शुरू हो गई।

pk- pj.k flg dk R;kx i=%

आखिरकार मोरारजी देसाई ने चौ. चरणसिंह का इस्तीफा मांग लिया। उन्होंने 1 जुलाई 1978 को त्यागपत्र दे दिया। इससे सरकार व पार्टी में निराशा छा गई। जनता में भी रोष पैदा हो गया। चौ. चरण सिंह के समर्थन में जगह–जगह रैलियां होने लगी। दिल्ली में भी किसानों की बहुत बड़ी रैली हुई। जय प्रकाश नारायण भी बहुत परेशान हुए। उन्हें यह सरकार टूटने का खतरा नजर आने लगा और मोरारजी देसाई को समझाया गया तथा चौ. चरण सिंह को भी समझाया कि जनता ने पांच साल शासन करने का बहुमत दिया है, उनकी आशाओं को ना तोड़ा जाए। आखिरकार दोनों नेता सहमत हो गए और मोरारजी देसाई ने उनको 24 जनवरी 1979 को प्रधान व वित्तमंत्री बनाया। श्री जगजीवन राम को भी उप–प्रधानमंत्री बनाया। सरकार फिर ठीक से काम करने लगी। परन्तु इंदिरा गांधी व कांग्रेस पार्टी फिर से बेचैन हो गई और किसी तरह इस सरकार को तोड़ने के हथकंडे अपनाने लगी।

pk- pj.k flg dk çèkkuea=h cuuk%

कांग्रेस ने जनता पार्टी सरकार को तोड़ने के प्रयास शुरू कर दिए। कांग्रेस पार्टी ने विचार किया कि चौ. चरण सिंह प्रधानमंत्री बनने की महत्वकांक्षा रखते हैं। उनको किसी तरह से संदेश दिया जाए व विश्वास में लिया जाए कि अगर वे इस सरकार से इस्तीफा दें तो कांग्रेस समर्थन से प्रधानमंत्री बन सकते हैं। इस कार्य का जिम्मा संजय गांधी को सौंपा गया। उन्होंने चौ. चरण सिंह से इस बारे में बात की। चौ. चरण सिंह को विश्वास नहीं हुआ कि कांग्रेस उनको समर्थन दे सकती है। वह जानते थे कि कांग्रेस तो दूसरी सरकारों को तोड़ती रही है। परन्तु बार–बार भक्त हनुमान के आग्रह पर राम जी भी सहमत हो गए। क्योंकि वह लम्बे समय से किसान नेता रहे थे तो वह किसान प्रधानमंत्री बनना चाहते थे ताकि किसान व कृषि का उत्थान हों।

चौ. चरण सिंह व श्री राजनारायण ने अपने विश्वास पात्र सांसदों से सलाह मश्वरा करना शुरू कर दिया। जब उनको अहसास हो गया कि काफी सांसद उनके साथ आ सकते हैं और बल्कि कांग्रेस सांसदों से हाथ मिलाकर उनका सदन में बहुमत बन सकता है, तो उन्होंने मंत्रीमण्डल से त्यागपत्र दे दिया। यह कदम सरकार व जनता के लिए बड़ा आश्चर्यजनक था। उन्होंने 28 जुलाई 1979 को राष्ट्रपति श्री नीलम संजीवा रेड्डी को अपनी बहुमत की लिस्ट पेश की जिसमें जनता पार्टी के 80 सांसद के अलावा कांग्रेस के सांसद थे। इससे मोरारजी देसाई की सरकार अल्पमत में आ गई। राष्ट्रपति ने चौ. चरण सिंह को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिला दी व 20 अगस्त तक बहुमत सिद्ध करने को कहा।

15 अगस्त 1979 को चौ. चरण सिंह ने लाल किले पर राष्ट्रीय झण्डा फहराया। इस समय भारी संख्या में आम जनता व किसान इकट्ठे हुए चौ. चरण सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि हमारी सरकार देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत करेगी। किसानों व कृषि तथा मजदूरों व पिछड़ो का उद्धार किया जाएगा। देश की सुरक्षा प्रणाली मजबूत की जाएगी तथा जरूरत हुई तो परमाणु बम भी बनाए जाएंगे। उनके इस कथन से कांग्रेस बड़ी बेचैन हुई कि हमारे देश की नीति शांति पथ पर चलने की है, परमाणु युद्ध की नहीं। कांग्रेसी उनको सत्ता पर नहीं देखना चाहते थे। इंदिरा गांधी ने तो सिर्फ सरकार तोड़ने के लिए ही उनको समर्थन दिया था।

dk;okgd çèkkuea=h%

19 अगस्त को कांग्रेस ने चौ. साहिब को सन्देश भेजा कि अगर वह इंदिरा गांधी व संजय गांधी के खिलाफ चलाए मुकदमें वापिस लेंगे तो ही उनको 20 अगस्त को सदन में समर्थन मिलेगा। अब तो चौधरी साहब समझ गए कि ये तो इंदिरा गांधी की हमारी सरकार को तोड़ने की चाल थी। उन्होंने निर्णय लिया कि मामले वापिस नहीं लिए जाएंगे चाहे मैं प्रधानमंत्री रहूं या नहीं। अगले दिन चौ. साहिब लोकसभा में हीं नहीं आए और सीधे राष्ट्रपति को इस्तीफा

जिस देश में सम्मान न हो, बंधु–बांधव न हों और विद्या की प्राप्ति न हो, वहां नहीं रहना चाहिए। –चाणक्य

दे दिया। राष्ट्रपति ने उनको छः महीने के लिए कार्यवाहक प्रधानमंत्री बने रहने को कहा। इस दौरान उन्होंने देश में घूम कर लोगों को संबोधन किया। किसानों को सस्ता ऋण मिले इसके लिए नाबार्ड बैंक की स्थापना की। पिछड़े वर्ग के कल्याण के लिए मंडल आयोग की स्थापना की।

tuojh 1980 dk pquko%

जनवरी 1980 में देश में लोकसभा के चुनाव हुए इसमें जनता पार्टी के घटकों की करारी हार हुई। चौ. चरण सिंह की लोकदल पार्टी को सिर्फ 40 सीटें मिली। कांग्रेस भारी बहुमत में विजयी हुई और इंदिरा गांधी फिर देश की प्रधानमंत्री बन गई। उन्होंने सारे मुकदमें वापिस लिए व विशेष अदालतें भी भंग कर दी। फिर वह एक छत्र शासन करने लगी।

bfnjk xkèkh dh eR;q%

इंदिरा गांधी ने अमृतसर मन्दिर से उग्रवादी सिक्खों को बाहर करने के लिए ऑप्रेशन ब्लू स्टार कराया जिसमें मिलिट्री की मदद से उनको मारा गया। इसमें सिक्ख लोग नाराज हो गए। 31 अक्तूबर 1984 को जब सुबह इंदिरा गांधी अपने आवास से दफ्तर के लिए निकलीं तो उनके दो सिक्ख अंगरक्षकों ने उन पर अंधा–धुंध गोलियां चला दी जिससे उनकी मृत्यु हो। बाद में इनको फांसी की सजा दी गई थी।

अचानक इस घटना से देश दहल गया और दिल्ली में सिक्ख समुदाय के खिलाफ काफी रोष व आगजनी हुई तथा सम्पत्ति व जन हानि हुई। राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने इंदिरा गांधी के बेटे राजीव गांधी को प्रधानमंत्री बना दिया। इससे पहले संजय गांधी की एक विमान दुर्घटना में दिल्ली में मृत्यु हो गई थी।

pkèkjh pj.k flag dk Loxokl%

चौ. साहिब काफी बुजुर्ग हो गए थे वह अस्वस्थ भी रहने लगे थे, जिसमें कारण राजनीतिक गतिविधियों से भी परे हो गए। 29 मई 1987 को उन्होंने दिल्ली आवास पर अन्तिम सांस ली व प्रभु को प्यारे हो गए। उनका दाह संस्कार यमुना के किनारे किसान घाट पर किया गया और समाधि बनाई गई। यह घाट किसानों व गरीबों के लिए एक तीर्थ के बराबर है। चौ. चरण सिंह की याद में कई जगह प्रतिमाएं लगाई गई है। मेरठ विश्वविद्यालय का नाम उनके नाम पर हैं संसद में उनकी तस्वीर लगाई गई, जहाँ सांसद उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

gfj;k.kk Ñf"k fo'ofo|ky;] fglkj dk uke cnyuk%

जब केन्द्र में 1991 में श्री चन्द्र शेखर की सरकार थी व चौ. देवीलाल उप–प्रधानमंत्री थे, तो उन्होंने इस विश्वविद्यालय का नाम चौ. चरण सिंह पर रखने का प्रस्ताव संसद में पास कराया व राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद 31 अक्तूबर 1991 को चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार नाम रखा गया।

इस विश्वविद्यालय ने कृषि क्षेत्र में बहुत उन्नति की व फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जिससे उत्पादकता बढ़ी व किसान खुशहाल हुए। वैज्ञानिकों को इसके लिए अवार्ड भी मिले। हमारी गेहूं की टीम ने बहुत उपजाऊ किस्में विकसित की थी जिसे हरियाणा व आसपास के राज्यों में गेहूं की काफी उपज बढ़ी तथा हमारी टीम को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, दिल्ली ने सन् 1997 में बेस्ट टीम का अवार्ड दिया व विश्वविद्यालय को भी बेस्ट कृषि संस्था का सम्मान मिला जिससे इस विश्वविद्यालय का नाम न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक डॉ. आर. एस. पड़ोदा भारतीय कृषि विज्ञान परिषद् के डायरेक्टर जरनल व कृषि सचिव थे।

अब 22 दिसम्बर 2019 को विश्वविद्यालय के प्रशासन भवन के सामने चौ. चरण सिंह की पुरानी छोटी प्रतिमा की जगह बड़ी 9 फुट की प्रतिमा का अनावरण चौ. देवीलाल के प्रपौत्र व हरियाणा के उप–मुख्यमंत्री श्री दुष्यंत चौटाला ने किया। उन्होंने इस विश्वविद्यालय द्वारा किसान हित में किए गये कार्यों की सहाराना की व प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। कुलपति डॉ. के.पी. सिंह को किसानों के लिए और अधिक प्रयास करने के लिए विश्वविद्यालय को 31 लाख रुपये का अनुदान दिया।

महान किसान नेता चौधरी चरण सिंह की याद में 23 दिसम्बर को उनका जन्म दिन पूरे देश में किसान दिवस के नाम पर मनाया जाता है।

जय हिन्द! जय जवान!, जय किसान, जय कृषि विज्ञान!

हमें जिन पर गर्व है

दिनांक 13.06.2020 को देहरादून में IMA-146 बैच की पासिंगआऊट परेड हुई। इस परेड में कुल 423 जैनटलमैन केडैट पासआऊट हुए, जिनमें 333 भारतीय तथा 90 मित्रदेश से थे।

जैनटलमैन केडैट सुमित सांगवान ने IMA-146 बैच में एकैडमिक में टॉप करते हुए मैडल प्राप्त किया और भारतीय सेना में लेफ्टीनेट का पद प्राप्त किया।

सुमित सांगवान के पिता जी चण्डीगढ़/पंचकूला जाट सभा के आजीवन सदस्य है और एच.एम.टी मशीन टूल्ज़ पिंजौर में डिप्टी इंजिनियर के पद पर कार्यरत है।

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला सुमित सांगवान की इस उपलब्धि के लिए बधाई देती है और इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। – स्वामी विवेकानंद

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM Jat Girl Divorcee (DOB 23.07.88) 31.11/5'3" BDS. Own practice. Father VRS from Revenue Department & own business, Mother housewife. Avoid Gotras: Chahar, Nain, Binda. Cont.: 7347378494, 9414465295*
- *SM4 Jat Girl (DOB 04.01.92) 28/5'4" M.Sc Physics, B.Ed, CTET passed. Employed as Teacher in Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Kundu, Siwach. Cont.: 8360227580, 9888396275.*
- *SM4 Manglik Jat Girl 26/5'2" M.A. Sociology from Punjab University. Avoid Gotras: Beniwal, Sejwal, Kadian, Kaliraman. Cont.: 8360250975*
- *SM4 Jat Girl (DOB 20.03.93) 27/5'6" B. Com, M.Com, B.Ed. UGC, NET qualified. Employed as Assistant Professor at CGC. Avoid Gotras: Dalal, Kadian, Dahiya. Cont.: 6283618150*
- *SM4 Jat Girl (DOB 02.12.91) 28/5'2" Convent Educated. B.E. (Civil Engineering), Gold Medalist P.U. M.Tech. & Phd Transportation Engineering from IIT Delhi. Selected for Post Doc USA. Father AGM, Mother Lecturer. Brother B.Tech. Civil PEC Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Mor, Sandhu. Cont.: 9996545234*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1988) 32/5'3" Post Graduate Employed as English Teacher in Chandigarh Administration. Father retired from Govt. of Haryana. Preferred officer or good statues match from tricity settled family. Avoid Gotras: Malik, Kundu. Cont.: 9417093860, 7009239419*
- *SM4 Jat Girl 26/5'5" M.Com., UGC, NET, Employed as Assistant Professor. Preferred match in Govt. job. Avoid Gotras: Kadian, Nehra, Sangwan. Cont.: 9569156984*
- *SM4 Jat Girl (DOB 08.11.92) 27/5'9" B.A., LLBM. from KUK. LLM (Business Law) from DDE KUK. Doing practice in Delhi High Court. Mother superintendent in Haryana Tourism. Avoid Gotras: Dalal, Ahlawat, Rana. Cont.: 8527067602*
- *SM4 Jat Girl (DOB September. 93) 26/5'4" B.A., B.Ed. Employed as Lecturer in Political Science in Delhi Govt. Avoid Gotras: Panghal, Dhanda, Sheoran. Cont.: 7009457235*
- *SM4 Jat Girl (DOB 02.09.88) 31/5'5" B.Tech. ECE from KUK. Pursuing PGDMM (NMIMS). Working experience in teaching. Worked in Jindal Industry Hisar. Father retired Executive officer from MC. Rohtak. Avoid Gotras: Sangwan, Hooda, Sehray. Cont.: 9050656227*
- *SM4 Jat Girl (DOB 03.09.90) 29/5'2" BCA, B.Ed, MSC (CS). Avoid Gotras: Gahyan, Lamba, Nandal. Cont.: 7696771747*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.02.92) 28/5'4" M.Sc. Physics, B.Ed, PTET, Employed as Teacher in private school, Chandigarh. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Singhmar. Cont.: 9463330394*
- *SM4 Jat Girl 26/5'8" M.A. English. Stenography in both English & Hindi. Employed as Junior Scale Stenographer in Irrigation Department Haryana at Headquarters Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Sangwan, Dahiya. Cont.: 9217884178*
- *SM4 Jat Girl (DOB 25.10.92) 27/5'5" B.Tech (Electronic & Communication). Avoid Gotras: Dhayal, Punia, Phogat. Cont.: 9416270513*
- *SM4 Jat Girl (DOB 16.10.94) 25/5'4 " B.Tech (ECE) from KUK, Pursuing MBA regular. Father Headmaster, Mother Govt. teacher. Avoid Gotras: Narwal, Kadian, Ranjha. Cont.: 9416821023*
- *SM4 Jat Girl (DOB 14.10.93) 26/5'3 " B.Sc. Non-Medical, M.Sc. Math.Avoid Gotras: Joon, Bakhal, Galyan, Sangwan. Cont.: 9467311110*
- *SM4 Jat Girl (DOB 24.06.93) 26/5'3 " M.Sc, MCA., GIS, B.Ed. Math, English. Employed as PGT Geography. Avoid Gotras: Joon, Khatkar, Rathi. Cont.: 9050001939*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.06.92) 27/5'5" BCA, MCA, HTET. Employed as Programmer in Panchayat Department. Avoid Gotras: Redhu, Deswal, Sandhu. Cont.: 9728108634*
- *SM4 Jat Girl (DOB 25.04.93) 26/5'4 " MSc. Nursing. Employed as Lecturer in Swami Devidayal Nursing College Barwala. Avoid Gotras: Pilania, Malik, Singrowa. Cont.: 9896813684*
- *SM4 Jat Girl 28/5'2" B.Sc., B.Ed, MSc. Avoid Gotras: Bura, Lamba, Bolan. Cont.: 9872511366*
- *SM4 Jat Girl (DOB 04.06.91) 28/5'4" B.Sc., MSc, PhD. from DTU. Employed in P.U. as Guest faculty. Preferred Govt. job of Education and Defence line. Avoid Gotras: Khatri, Punia, Chhikara. Cont.: 8802251151*
- *SM4 divorced Jat Girl (DOB 25.01.79) 41/5'3" Employed as Teacher in Haryana Government. Avoid Gotras: Vaze, Nain. Cont.: 9417312560*
- *SM4 Jat Girl (DOB 17.09.95) 24/5'4" M.Com, B.Ed, Doing NET. Avoid Gotras: Chahal, Sheokand, Moga, Dhull. Cont.: 9468407521*
- *SM4 Jat Girl (DOB 25.04.92) 27/5'3" M.Sc. (Math & Computer Science), MA Economics. B.Ed, HTET, NET clear. Avoid Gotras: Dalal, Rathi, Dhull. Cont.: 8295805809*
- *SM4 Jat Girl (DOB 31.10.95) 24/5'4" BDS, MPH (Kerala). Avoid Gotras: Nain, Dhimara, Mehla. Cont.: 9991941885*
- *SM4 Jat Girl (DOB June,1987) 33/5'2" B.Tech (CSC). Employed as Software Developer (Delivery Manager) in Chandigarh with Rs. 18 lakh package PA. Father retired from U.T. Chandigarh. Two elder sisters well settled abroad. Avoid Gotras: Jaglan, Gahlan, Kadian. Cont.: 7837113731*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1988) 32/5'3" MA, Economics, PhD (Economics) NET clear. Serving in Chandigarh as Assistant Professor. Father class-II officer retired from Haryana Government. Brother settled in USA. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Jatrana. Cont.: 9988224040*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.09. 92) 27/5'2" B.Sc (Math) M.Sc (Math with computer science). B.Ed, HTET, CTET, RTET qualified. Preparing for NET. Avoid Gotras: Jatain, Dahiya, Dhatarwal. Cont.: 8901273699, 9812578246*
- *SM4 Jat Girl (DOB18.08. 96) 23/5'2" B.Sc. Hons. (Zoology). Pursuing M.Sc. Hons. (Zoology) from P. U. Chandigarh. Avoid Gotras: Jatain, Dahiya, Dhatarwal. Cont.: 8901273699*
- *SM Jat Boy (DOB 20.07.92) 27.11/6 feet, B.Com, Own Real*

Estate Business, Father VRS from Revenue Department & own business. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahar, Nain, Binda. Cont.: 7347378494, 9414465295

- *SM4 Jat Boy (DOB15.12.91) 28/5'8" B.Tech. (Civil). Employed as regular J.E. in Town & Country Planning Haryana at Panchkula. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Dabas, Punia, Barak. Cont.: 9466240260, 9417880207*
- *SM4 Jat Boy (DOB18.09.88) 31/5'11" B. Com. C.A. Own Practice as C.A. Avoid Gotras: Mann, Balhara, Hooda. Cont.: 9646880418.*
- *SM4 Jat Boy (DOB19.08.94) 25/5'8" B. Tech. from Kurukshetra University. Avoid Gotras: Gulia, Ghanghas, Sandhu. Cont.: 9467762881, 7015124529.*
- *SM4 Jat Boy 26.6/5'7" B.Com. Employed as A.S.I. in Central Govt. (C.I.S.F). Father Haryana Govt. Employee, Mother housewife. Brother in MNC at Gurugram. Avoid Gotras: Kharb, Rathee, Jatrana. Cont.: 8708981317*
- *SM4 Jat Boy (DOB 24.08.90) 29/5'10" B. A. from Punjab University. Master in Mass Communication from Chitkara University. Working as Line Producer in reputed Sikhya Entertainment Co. at Bombay. Earning 10-12 lakh P.A. Father retired from Bank. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Three acre land at Village. Avoid Gotras: Rathee, Ahlawat, Khatri. Cont.: 9417377302*
- *SM4 Jat Boy (DOB13.01.91) 29/5'8" MBA, Employed as P.O. in Bank of Baroda. Avoid Gotras: Narwal, Mann, Duhan. Cont.: 9417579758*
- *SM4 Jat Boy (DOB18.09.88) 31/6' B.Com, C.A. Doing practice as C.A. Father retired S.I. Chandigarh. Family settled in Chandigarh. Preferred qualified C.A. girl. Avoid Gotras: Mann, Bhalra, Hooda. Cont.: 9417213500*
- *SM4 Jat Boy (DOB 20.12.90) 29/5'10" B.Tech. Civil. Employed as clerk in Haryana Government. Avoid Gotras: Panghal, Dhanda, Sheoran. Cont.: 7009457235*
- *SM4 Jat Boy (DOB 08.09.86) 33/6' B.Tech. Employed as Technical Archited Company, Nokia, Bangaluru with Rs. 21-22 lakh package PA. Required tall, beautiful girl. Avoid Gotras: Chhikara, Rathi, Dahiya. Cont.: 9416234193, 7888463740*
- *SM4 Jat Boy (DOB 04.10.88) 31 PhD (Management) Job & Permanent Resident (PR) of Canada from 7/2019. (Now for short visit in India) Former two times class-I officer in India. Father class-I officer retired from Haryana Govt. Avoid Gotras: Malik, Jhanjharia, Hooda. Cont.: 9876155702*
- *SM4 Jat Boy (DOB 26.09.91)28/5'8" B.A. LLB Advocate in Punjab & Haryana High Court. Three houses, three acre land in village, three shops and three plots. Avoid Gotras: Poonia, Nain, Sihag. Cont.: 9316131495, 7973059762*
- *SM4 Jat Boy (DOB 18.10.90) 29/6'1" B. Tech. Employed as Inspector in CBI. Preferred highly qualified girl with at least 5'4" height. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal, Mor. Cont.: 9023492179*
- *SM4 Jat Boy (DOB July, 91) 28/5'11" B.Tech., M.Tech. in Civil Engineering. Working in MNC Gurgaon. Avoid Gotras: Rathi, Gahlan. Cont.: 9815094054*
- *SM4 Jat Boy (DOB Feb. 89) 31/5'11" MBBS, Doing MD. Avoid Gotras: Sangwan, Dhatarwal, Legha. Cont.: 8058980773*
- *SM4 Jat Boy (DOB19.02.90) 30/5'11" B.A. LLB. Avoid Gotras: Loura, Bharman, Sindhu, Deswal, Duhan. Cont.: 9463653724*
- *SM4 Jat Boy (DOB 01.04.84) 35/5'8" B.A. Avoid Gotras: Loura, Bharman, Sindhu, Deswal, Duhan. Cont.: 9463653724*
- *SM4 Jat Boy 27/5'11" M.A. Economics, JBT, Employed as regular JBT Teacher in Delhi Govt. School. Avoid Gotras: Bhaker, Punia, Kaswan. Cont.: 6239019166, 9780260305*
- *SM4 Jat Boy (DOB15.03.91) 28/5'9" B.Tech. Computer Science, MBA. Working in Software Development Programming since 2012. Now working in MNC Co. as Team Lead Manager with package 30 lakh annual and total family income 50 lakh PA. Preferred working and highly qualified & urban living small family or own house in nearby Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Bheru, Mor. Cont.: 9896618617*
- *SM4 Jat Boy 31/6'3" B.Tech. Computer Science. Working in HCL NOIDA with package 23 lakh PA. Mother lecturer (Rtd.), Three sisters well settled. Well educated family, house in Jind & Gurgaon. Preferred MNC working tall girl. Avoid Gotras: Redhu, Malik. Cont.: 8447665851*
- *SM4 Jat Boy 26/6'1" Polytechnic Electrical Diploma. Working in MNC with package 4 lakh PA. Mother teacher (Rtd.). Brother, sister well settled. Agriculture land in village and residing in city. Preferred tall girl & in service. Avoid Gotras: Mor, Malik, Budhwar. Cont.: 8295865543*
- *SM4 Jat Boy (DOB15.05.89) 30/5'11" B.Tech (E &C), MA Geography, Doing PhD. as JRF. Father Assistant Commissioner CGST, Mother Assistant Professor. Preferred tall beautiful JRF/NET qualified girl. Avoid Gotras: Ahlawat, Mann, Sangwan. Cont.: 9896190998*
- *SM4 Jat Boy 31/5'6" Four year degree of Hotel Management from Abroad (Europe). Working in private IT Company. Father Govt. retired class-I officer. Own triple storey house at Zirakpur. Six acre agriculture land in village. Avoid Gotras: Nehra, Ghanghas, Dalal. Cont.: 9814312226*
- *SM4 Jat Boy 32/5'10" B.Tech, MBA, CFA, Employed in MNC at Banglore with 38 lakh package PA. Preferred MBA girl. Avoid Gotras: Mor, Gehlawat, Cont.: 8360609162*
- *SM4 Jat Boy (DOB 02.09.98) 21/6 feet B.Tech. in Computer Science. Avoid Gotras: Nain, Dhimara, Mehla. Cont.: 9991941885*
- *SM4 Jat Boy (DOB 15.05.89) 30/5'11" B.Tech. (E&C), MA Geography, doing PhD. as JRF. Father Assistant Commissioner CGST, Mother Associate Professor. Required tall, beautiful & fair, JRF/NET qualified girl. Avoid Gotras: Ahlawat, Mann, Sangwan. Cont.: 9896190998*
- *SM4 Jat Boy (DOB 22.04.87) 32/5'7" B.Tech. in Electrical & Communications. Employed in MNC. Delhi. Avoid Gotras: Sangroha, Nain, Kaliraman. Cont.: 9466569366, 7015021974*
- *SM4 Jat Boy (DOB 1990) 29/5'6" B.Tech. Working as J. E. in Metro Railway Delhi. Required Govt. job girl. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhall. Cont.: 9467671451*

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

श्रद्धांजलि

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला चौ. छोटू राम सेवा सदन जम्मू व अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति के अध्यक्ष व हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक पूर्व मेजर डा. एम.एस. मलिक, आईपीएस (सेवानिवृत) ने संस्थाओं के अन्य सदस्यों के साथ समस्त समाज, पुलिस बलों व वरिष्ठ सैनिकों की ओर से पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी में चीनी सैनिकों के साथ खूनी संघर्ष में शहीद हुए कर्नल संतोष बाबू व 20 अन्य बहादूर जवानों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करके गहरा दुख प्रकट करते हुए परमपिता परमेश्वर से अरदास की हैं कि परमपिता संकट की इस घड़ी में पीड़ित परिवारों को शहीदों की शहादत से हुये गहन आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करे व दिवंगत आत्माओं को शांति व स्वर्ग में स्थान दे। हम इन शहीदों की शहादत को नमन करते हैं और साथ ही गर्व महसूस करते हैं कि देश की सुरक्षा के लिये किया गया इनका बलिदान व्यर्थ नहीं जायेगा।

डा. मलिक ने आगे बताया कि वे स्वयं मेजर के तौर पर वर्ष 1968–70 तक चीन की सीमाओं पर अपनी सेवायें दे चुके हैं। घटना पर खेद व्यक्त करते हुये कहा कि इस क्षेत्र में चीन व भारतीय सेना के बीच धक्का मुक्की व पथराव की घटनायें तो पहले भी होती रही हैं लेकिन बटालियन के सीईओ सहित 2 दर्जन से अधिक जांबाज सैनिकों का निहत्थे शहीद होना देश की सुरक्षा के लिये बेहद गंभीर व विचारणीय मामला है जोकि चीन की घटिया व नीच सोच को दर्शाता है। वर्ष 2013 में भारतीय सेना के उच्च कोटि के अधिकारियों तथा सुरक्षा विशेषज्ञों ने भारत की सीमा सुरक्षा को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिये लेह से लेकर नीचे उत्तराखंड तक आधुनिक तकनीक एवं हथियारों से लैस हथियारबंद असाल्ट हैलिकाप्टर तथा उच्च कोटी के सर्विलांस सिस्टम सहित दो Mountarian Striking Force खड़ी करने का सुझाव दिया था। उस समय इस प्रोजेक्ट की लागत 76 हजार करोड़ थी। वर्ष 2016 में यह अनुमोदन व स्वीकृति के लिये रक्षा विभाग से वित्त विभाग को भेज दी गई और वर्ष 2018 में इस प्लान को तत्कालीन रक्षा मंत्री स्व. अरूण जेटली के समय रिजैक्ट कर दिया गया जबकि उस समय सेना का वार्षिक बजट 3 लाख 5 हजार करोड़ का था जिससे थोड़े खर्च से ही इसको पूरा किया जा सकता था। यदि उस समय यह स्ट्रांकिग फोर्स बन गई होती तो आज इस तरह के हालात शायद न देखने पड़ते।

उन्होंने आगे कहा कि आज सारे देश में इस घटना से चीन व पीएलए के विरूद्ध रोष चरम सीमा पर है और अफरा तफरी में सरकार की ओर से सशस्त्र सेनाओं को हथियारबंद गाड़ियां गलवान घाटी में चीन बार्डर की ओर भेजी जा रही हैं। इसके लिये रास्ते में जवानों को घाटी के ठंडे वातावरण के अनुकूल ढालने की भी प्रक्रिया अपनानी पड़ेगी जिसमें 2–3 दिन का समय लग सकता है। यदि वहां पर स्ट्राकिंग फोर्स तैनात की होती तो इस प्रकार के हालात से बचा जा सकता था इतने जवानों का हाथापाई की लड़ाई में पहाड़ी क्षेत्र में शहीद होना व पानी में बह जाना सेना के प्रशिक्षण की कमी को भी जाहिर करता है। अतः सरकार से अनुरोध है कि सशस्त्र सेनाओं का हौंसला बनाये रखने तथा राष्ट्र के नागरिकों की भावना का सम्मान करते हुये चीन को इस दुस्साहस पूर्ण कार्यवाही का तुरंत मुंह तोड़ जवाब देना चाहिए। साथ ही इस क्षेत्र में सुरक्षा तंत्र पर पुनः विचार करके अधिक प्रभावी बनाये जाने की आवश्यकता है व चीन पर अंतरराष्ट्रीय नियंत्रण रेखा का सम्मान बनाये रखने संयुक्त राष्ट्र व अन्य देशों द्वारा दबाव बनाने की जरूरत है। इसके साथ ही हम केंद्रिय सरकार व संबंधित राज्य सरकारों से अनुरोध करते हैं कि शहीद कर्नल संतोष बाबू व अन्य शहीदों के परिवारों को 2 करोड़ रूपये की सम्मान राशि व प्रत्येक शहीद के परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी जाये। इसके साथ ही इस संघर्ष में जो जवान लापता है उनकी तुरंत तलाश की जाये। संकट की इस घड़ी में जाट सभा, चंडीगढ़, चौ. छोटू राम सेवा सदन जम्मू व अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति के समस्त सदस्यगण सरकार द्वारा राष्ट्र की सुरक्षा हेतु किये जाने वाले प्रयासों का भरपूर सहयोग व समर्थन करते हैं। नेपाल व पाकिस्तान की सीमाओं पर भी अधिक चौकसी बढ़ाई जाने की आवश्यकता है क्योंकि ऐसे समय पर पाकिस्तान कोई भी नुकसानदायक हरकत कर सकता है।

हृदय की कोई भाषा नहीं होती। हृदय से बातचीत करता है। – महात्मा गांधी

सार्वजनिक अपील

जैसा कि आप सभी को मालूम है कि समस्त विश्व कोरोना वायरस की महामारी के संकट के दौर से गुजर रहा है, जिसने आमजन के स्वास्थ्य के साथ-साथ राष्ट्र की वित्तीय व्यवस्था को भी डांवाडोल कर दिया है। हरियाणा भी इस महामारी से अछूता नहीं हैं, दिन-प्रतिदिन कोरोना से संक्रमित लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह जानलेवा बीमारी लम्बे समय तक चल सकती है।

देश एवं प्रदेश में विकट हालातों के मध्यनजर जाट सभा द्वारा अपने दोनों भवनों :- सैक्टर-27, चण्डीगढ़ जाट भवन तथा सैक्टर-6, पंचकूला में स्थित सर छोटूराम भवन तथा चौधरी छोटूराम सेवा सदन कटरा-जम्मू के 10 कनाल के प्लॉट को कोरोना से संक्रमित मरीजों के ईलाज के लिए संबंधित प्रशासन/सरकारों को सौंप दिया गया है। पंचकूला स्थित सर छोटूराम भवन तो स्वास्थ्य विभाग पंचकूला के उन डाक्टरों की टीम को रहने के लिए दिया गया है जो कोरोना से संक्रमित मरीजों को ईलाज करने में सेवारत है।

जाट सभा पंचकूला/चण्डीगढ़ हमेशा ही समाजसेवा के कार्यों में अग्रणी रहती है। वर्तमान कोरोना की महामारी के संकट को देखते हुए जाट सभा ने पीड़ितों की सहायता के लिए **'हरियाणा कोरोना रिलिफ फंड'** में **1 लाख 11 हजार रुपये** की राशि अनुदान में दी है, यह प्रयास सभी के सहयोग से आगे भी जारी रहेगा। जाट सभा पंचकूला/चण्डीगढ़ के पास इस प्रकार की आपदाओं या महामारी के लिए अपना कोई स्थाई कोष नहीं है और ऐसी परिस्थितियों में आप सभी दानी सज्जनों के सहयोग से वित्तीय अनुदान का प्रबंध किया जाता है।

इसलिए आप सभी से नम्र निवेदन है कि राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक आपदा की इस घड़ी में सार्वजनिक हित को देखते हुए अपनी इच्छा अनुसार भरपूर आर्थिक सहयोग एवं हर संभव सहायता प्रदान करें। इसके साथ ही इस भयंकर बीमारी से बचाव हेतू सरकार द्वारा घोषित कर्फ्यू/लॉकडाऊन व इस संदर्भ में जारी सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करें।

जाट सभा को दी जाने वाली अनुदान राशि 'जाट सभा चण्डीगढ़' के पक्ष में चैक/डिमांड ड्राफ्ट की मार्फत जाट भवन, 2 बी, सैक्टर-27ए, मध्य मार्ग चण्डीगढ़-160019 में भेजी जा सकती है। इसके अलावा, धनराशि एनएफटी/आरटीजीएस द्वारा जाट सभा चण्डीगढ़ के बचत खाता नम्बर-5010023714552, आईएफएससी कोड - एचडीएफसी 0001321 में सीधे ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा-80 सी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : **डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)**
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932, 2641127
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172-2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।